अनुक्रमाणिका

पुस्तक	आत्मारामीय्म
सम्प्रेरक	डा० सुव्रत मुनि शास्त्री
रचीयता	कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री
सम्पादक व अनुवादक	डा० सुव्रत मुनि शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी०
प्रथमावृत्ति	आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म० दीक्षा शताब्दी वर्ष सन् १९९३
लागत	१६ रु०
फोटोकम्पोजिग	अम्बिका प्रिटर्स कन्हैया नगर त्री नगर दिल्ली - ३५
मुद्रक	महावीर प्रिटर्स एण्ड पैकर्स फोन ७२४५४२८

समर्पणम्

जैनागमाना ननु पार ह्यत्वा,
आचार्यसम्राड् मुनिरात्मराम ।
शुद्ध प्रबुद्धश्च जितेन्द्रियश्च,
काव्याञ्जलि नो ह्युररीकरोतु ।।१।।

विवेकशील सुमनास्तपस्वी,
सुधीवर शास्त्रविचक्षणश्च ।
त्यागी विरागी गुरुरात्मराम,
काव्याञ्जलि नो ह्युररीकरोतु ।।२।।

सूर्यो यथा रश्मिचयै स्वकीयैर्,
विभाति चण्ड गगने सदैव ।
तथैव पूज्यो गुरुरात्मराम,
काव्यञ्जलि न ह्युररीकरोतु ।।३।।

गाङ्ग मम पूततर चरित्रम्,
यस्याऽत्रलोके मनुजान्पुनाति ।
तस्यात्मरामस्य मुनीश्वरस्य,
पादारविन्देषु समर्पण वै ।।४।।

यस्यप्रसादाद्वयमत्रविज्ञा,
यस्य कृपातो धन-धान्य-वृद्धा ।
यस्य दयात सुख-शान्ति-पन्ना,
तत्पादपद्मेष्विदमर्पण स्यात् ।।

कुछ अपनी ओर से

विश्व इतिहास मे अनेक ऐसे महापुरूषो की गौरव गाथाए अंकित है। जिनके उज्जवल आदर्श चरित्र मानव जीवन के लिए प्रेरणा प्रदीप का कार्य करते है। अनेक ऐसे महान साधक और योगीश्वर हुए हैं, जो अकिंचन होकर भी बडे-बडे वैभवशाली सम्राटो से अधिक पूज्य और सम्मानीय रहे है।

आचार्य जैन धर्म दिवाकर जैन आगम रत्नाकर, श्रमण शिरोमणि, महान, योशीश्वर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज का जीवन भी मानव-मात्र के लिए जीवन्त प्रेरणा का ऐसा ही अनूठा अवदान है। आचार्य देव पूज्यवर श्री आत्माराम जी म० का चरित्र एक विकासशील पुण्य परम्परा का गौरवमान है। इसमे सन्निहित आदर्श को अपने जीवन मे घटित करने वाला प्रत्येक मनुष्य पूज्य आचार्य देव के समान कीर्तिशाली और पुण्य पुरूष बन सकता है।

पूज्यप्रवर आचार्य श्री आत्माराम जी म० का जीवन श्रमण परम्परा का एक देदीप्यमान प्रकाश पुज्य था। उनकी वाणी मे तप की तेजस्विता, त्याग की ओजस्विता, योग की महिमा, ध्यान की सौम्यता, मनन का माधुर्य, चिन्तन का चन्दन की शीलता, तत्त्व साक्षात्कार का अमिट सत्य प्रम्फुत्त्वि हुआ था। पूज्यवर आचार्य श्री जी महाराज एक सृजनशील महान व्यक्तित्व थे। आपके ज्ञान मे भविष्य, जीवन मे अतीत और वक्तव्य मे वर्तमान का समुज्जवल सामजस्य था। उनकी अप्रतिहत प्रतिभा मे जैन आगम ही नही भारतीय दर्शन साकार हो उठा था। उनके द्वारा लिखित मौलिक ग्रन्थ इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जैनागमो पर लिखी गई उनकी हिन्दी टीकाए बहुत ही रूचिकर और अद्वितीय है। यही नही, आपकी प्रतिभा के स्पर्श से सहज स्फुटित उपदेश जन-जन के जीवन को सुधासिक्त कर। सयम एव स्व पर कल्याण के मार्ग की ओर अग्रसर होते थे। उनके साक्षात विराजमान न होने पर भी उनका

ज्ञान मार्ग अब भी भक्त जनो को सन्मार्ग प्रदान कर रहा है। ऐसे परमोपकारी भव भयहारी, मगलकारी, महिमा धारी, धर्म देव, परमगुरु महाराज का यह दीक्षा शताब्दी वर्ष चल रहा है।

मैने परम पूज्य आचार्य देव के साक्षात् दर्शन तो नहीं किए फिर भी उनकी ज्ञान गरिमा से अभिभूत–प्रेरित हुआ मेरा मन चाहता था कि उनके श्री चरणारविदो मे अपनी भक्ति का अर्घ्य भेट करूँ। मेरी उसी भावना से प्रेरित होकर विद्वद्वरेण्य श्री कृष्णदत्त शर्मा शास्त्री जी ने आचार्य सम्राट पूज्य प्रवर श्री आत्माराम जी म० के महान जीवन को काव्य रूप मे सुगुफित किया है। इसके भाव गभीर शैली रूचि कर और भाषा सुगम एव सुबोध है। इसको हिन्दी अनुवाद करते हुए मुझे जो आनन्दानुभूति हुई है उसे शब्दो मे अभिव्यक्त नही किया जा सकता। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जब सहृदय पाठक इसको पढेगा तो उसका चित्त इसमे अवश्य रमेगा तथा मन की भाव धारा पावन बनेगी। अनुवाद करना बडा कठिन होता है फिर भी पूज्यगुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पदम चन्द जी म० सा० के आशीर्वाद एव श्रद्धा स्पद गुरुदेव उप-प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म० के कृपा प्रसाद से इस कार्य को सम्पन्न करने मे सफल हो सका हूँ।

मेरी भावना को अधिमान देते हुए धर्मानुरागी डा० श्री वत्स जी शास्त्री प्राध्यापक मोतीलाल नेहरु कालेज साऊथ कैम्पस दिल्ली ने इस पर भूमिका लिखकर इसे गरिमा पूर्ण बनाया है। एतदर्थ डा० श्री वत्स जी साधुवाद के पात्र है। उनकी इस सहज गुणज्ञता और सहृदयता से मन को बहुत प्रसन्नता हुई है।

इस पुस्तक के प्रकाशन मे जिस गुरु भक्त ने उदारता से अपना गुप्त आर्थिक सहयोग दिया है। वह निश्चित रूप से एक सच्चा सद्गृहस्थ साधक और अनन्य सन्त सेवक तथा आदर्श दानवीर है। उसकी इस अनुकरणीय सेवा

भावना से जो हार्दिक आ:हलाद मेरे मन मे प्रकट हुआ है, उसे लिए शब्दो की सीमा मे नहीं बान्धा जा सकता।

इस पुस्तक के प्रैस सम्बन्धी कार्यों के सम्पूर्ण दायित्त्व को श्री सुभाष चन्द जैन महावीर प्रिन्टर्स ने बहुत ही भक्तिभाव से पूर्ण किया हैं। मै उनकी धर्म भावना की अभिवृद्धि की कामना करता हूॅ। इसके अतिरिक्त दूसरे महानुभावो ने भी इसमे जो सहयोग दिया है वे सभी

साधुवादार्ह है।

विज्ञवर,

यह भक्ति काव्य सहृदय उदार पाठको एव मर्मज्ञ सुधीजनो को अवश्य ही प्रभावित और प्रेरित करेगा ऐसा दृढ विश्वास है। यह सब पूज्य आचार्यदेव के पुण्य का परिणाम है। इसके अनुवाद मे या सम्पादन मे यदि कही कोई दोष दृष्टि गोचर होता है तो वह मेरा प्रमाद है। सुविज्ञ सहृदय पाठको से अनुरोध है कि वे त्रुटियो का सशोधन करके अध्ययन करे और मेरी उन त्रुटियो की ओर सकेत करके मुझे अनुगृहित करे।

साधुवाद

१७ जून, अहिसा विहार रोहिणी

दिल्ली

विद्वदिवधेय

सुव्रत मुनि शास्त्री

प्रकाशकीय

परम पूज्य जैन धर्म दिवाकर, जैनागम रत्नाकर धर्मदेव आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के दीक्षा शताब्दी पर अनेक आयोजन हुए हैं सारे भारत वर्ष मे इसकी चर्चा हुई है। उसी शृखला मे सस्कृत के प्रख्यात और पुरस्कृत विद्वान श्री कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री जी ने "आत्मारामीयम्" प्रस्तुत सुकृति की रचना की है इसमे लेखक ने धर्म परायण जनता को बताया है कि भारत के इस महान योगीश्वरआचार्य देव पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने किस प्रकार तप सयम ज्ञान, ध्यान और योग की उच्चतम प्रक्रियाओ से जीवन को ज्योतिर्मय बनाया था। अध्यात्म के उच्च शिखरों पर प्रतिष्ठित होकर जगत को आत्म उत्थान का सन्मार्ग दिखाया था। जन जीवन मे फैले हुए अज्ञानतम को दूर कर उन्हे सम्बोधि प्रदान करके समुउज्ज्वल बनाया था।

अपने इस उत्तम कार्यों/सन्देशो से वे युग प्रवर्तक महापुरुष बने हुए हैं। पूज्य आचार्य श्री का जीवन उस अमृत सागर के समान है जिसका मधुर, शीतल जल पीकर कोई भी अपनी प्यास बुझा सकता है, आत्म सन्तुष्टि का अनुभव कर सकता है।

काव्य शास्त्रीय दृष्टि से यह उत्तम सस्कृत रचना है। पाठक को भक्ति और अध्यात्म के आनन्द से अभिभूत करने मे यह काव्य समर्थ है। गुरु भक्ति के इस अनुपम आनन्द से सस्कृत पाठक तो लाभान्वित होगे ही, साधारण हिन्दी पाठको को भी इससे भरपूर आनन्द मिलेगा।

परम पावन पूज्य वर आचार्य देव के सम्पूर्ण जीवन वृत्त को इसमे समाहित करके गागर मे सागर को समेटने जैसा प्रसशनीय प्रयास हुआ है।

प्रस्तुत काव्य के लेखक श्री कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री एम० ए०, भारतीय सस्कृति के प्रचारक, अनन्य प्रेमी और सन्त सेवक है। आप ने अनेक कृतियो की रचना की है, जोकि सरकार द्वारा पुरस्कृत भी हुई हैं। प्रकृत काव्य की भाषा शैली को सुगम और सरल बनाकर कवि ने इसे सर्वोपयोगी बना दिया है।

डा० श्री वत्स जी शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी, प्राध्यापक मोती लाल नेहरु कालेज साउथ कैम्पस दिल्ली ने इस पर सार गार्भित भूमिका लिखकर इसके गुण गौरव की अभिवृद्धि की है। श्री कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री और डा० श्री वत्स जी शास्त्री के हम अतीव आभारी हैं।

परम पूज्य डा० श्री सुव्रत मुनि जी महाराज शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी के प्रति हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं। उन्होने इस सुकृति का अनुवाद एव सम्पादन तो किया ही है इसका प्रकाशन भी उन्हीं के कृपा-प्रसाद से सभव हुआ है। अत निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि यह उनकी गुरु भक्ति का बिताना उत्कृष्ट तम रुप है।

धर्म देव आचार्य सम्राट पूज्य गुरुवर श्री आत्मा राम जी महाराज के ऐसे ऐसे समर्पित भक्त हैं, जो दान तो मुक्त मन से देते हैं, परन्तु नाम की इच्छा नहीं रखते। ऐसे ही गुरु भक्ति मे अनुरक्त दानवीर श्रावक का अर्थ सौजन्य हमे प्राप्त हुआ है ऐसे दानवीर गुरु भक्तो का हम हार्दिक स्वागत करते हैं और उनके मगलमय उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा करते हैं कि भविष्य मे भी उनका उदार सहयोग हमे मिलता रहेगा।

मन्त्री
पदम प्रकाशन पीतम पुरा दिल्ली
जेड पी १

प्रास्ताविकम्

अनाद्यनन्त तत्वचिन्तन सञ्चितामल पुण्य प्रवाहाणा पुण्य प्रवाहै प्रापिताखिल लोकालोक निर्गत कल्मषालोकितान्त - करणानामालोकितान्त, करणैर, पाकृत सकलभ्रान्त, धारणाना सन्धृत धर्म चर्यावर्याणामात्मनि रममाणाना परम तपस्विना आत्मारामभिधाना विधान विधाय चरितगत काव्य रुप खण्ड काव्यमखण्ड मर्जित यश शर्मणा, शर्मणा श्री कृष्ण दत्त शास्त्रिणा महाभागेन भागधेय च भागीकृत सौभाग्य सिन्धूनाम्। नि सन्देह तत्रभवता भवतामाचर्यवर्याणा चरितमिद भवरताना सकामा रति विरति विधाय विधास्यति वैराग्य पथपथिकाम्। यतस्तादृशानामकल्मष चेतसा महामानवाना महनीय चरित न केवल चरितम् अपितु चरणीयो हि पन्था स शिवमानसाना मानुषाणाम्।

पञ्चनद प्रान्ते पुण्यमये पवित्र तमे "राहो" ग्रामे क्षत्रिय कुलावतसस्य मनसारामस्यार्धाङ गनी परमैश्वर्य शालिनी परमेश्वरी धृतदेहमात्मानमिवा त्मारामममुमङ् के दर्श दर्श ददर्शात्मरुपमानन्दस्वरूपम्। पर विधेर्वैचित्र्याद चिरमेव जग्मतु दिव दम्पती विहाय निरालम्बमिव विधाय विहितात्मान मात्मारामम् । तदानीं विधिना सन्निधि कृतोऽसौ तत्र विराजमानाना माचार्यणा मोतीराम चरणानाम्। अन्तेवासिनो मते प्रखर कुशाग्रतामवधार्य शुभमुहूर्ते दीक्षयानुग्रहीत त गुरुरूपचक्रमे।

अशेषशेमुषी सम्पन्न श्रद्धेय श्री शालिग्राम परमाचार्य श्री मोतीरामश्च क्रमेण दीक्षया शिक्षया चात्माराममनु जग्रहतु । दिनेषु गच्छत्सु समधिगत समस्त सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि रय वटुरनधिगत केनापि जैनमुनिना जैन विदुषा वेत पूर्व पाञ्चाल स्थानक वासि जैन परम्परायाम् "उपाध्याय" पदम् अनन्तर च पारम्परिक महनीयम् आचार्यपद श्रमणसघस्य चा चार्य पदमलञ्चकार।

महामनस्वी खल्वय जन्मना देह देहेन च लोक मालोकीकृत्य मनसाऽऽत्मानमात्मना च राममभिरमय्य, बुद्धया विद्या विद्यया च शास्त्र समलड्कृत्य, सेवया दीक्षा दीक्षया च कृति सफलीकृत्य, चिन्तनेन चित्त, चित्तेन च शान्ति समधिगत्य, तपस्या सस्कारान् सस्कारैश्च सस्कृति सुसस्कृत्य, ज्ञानेनालोकमालोकेन च पन्थान परिष्कृत्य, धारणेन धैर्य धैर्येण च धरणीमपि चमत्कृत्य, कर्मणा परोपकार परोपकारेण च परलोक कालक्रमेण सनाथितवान्।

एव भूतमद्भुत महामान्य वदान्य विद्वत्तल्लज परोपकारिण धर्मधुरिण परमतपस्विन महामुनिमात्माराम महाभाग मभिलक्ष्य रचितया कयापि रचनया कस्यापि लेखनी कथ न धन्यता गच्छेत को वा पिपठिषु काव्य मिद पाठ पाठ स्वीया काव्य पिपासा न शमयेदात्मतृप्ति वा न विन्देत ? काव्यमिद न खलु कान्तासम्मितोपदेश युजे, पर प्रभुसम्मितोपदेश युजे वर्तते तथापीद काव्य शास्त्रीय रुचिर रुच न जहाति निज स्वरूप गतम्।

खण्डकाव्यमिदमात्मारामीय तन्नियमनिबद्धत्वान्न सर्गै र्विभक्तम्। कविना नायकस्य जीवन गतान् घटनाविशेषान् गुण विशेषान् कार्यविशेषान् वा विभज्य लधुभिरुपशीर्षकै कथानक विभक्तम् श्लोक सख्यापि तनैव क्रमेण निर्दिष्टा। काव्येऽस्मिन् अनुष्टुबुपजाति मन्दाक्रान्ता मालिनी स्रग्विणी शार्दूलविक्रीडित भुजड् प्रयात् त्रोटक द्रुतविलम्बित छन्दोभि षञ्चोत्तर त्रिशत (३०५) सख्यका श्लोका निबद्धा वर्तन्ते। एव सत्यपि कवेरत्रानुष्टुबुपजाति-प्रिये छन्दसी दरीदृश्येते।

मधुरया ललितया सरलया स्वाभाविकया भाषया निबद्धे क्लिष्टतया प्रयाससाध्यतया च सर्वथा परिहीने काव्येऽस्मिन् अवृत्याल्पवृत्या वा चकास्ति वैदर्भी रीति । सद्योऽर्थ बोधकतया च प्रसाद गुण , क्वचित्क्वचिच्च माधुर्य गुणो विराजते। आत्मारामस्य निवेदनमभिन्ध्य स्वाभाविकया प्रसाद गुण

गर्वितया रित्या सुन्दरमाह गुरुमोती राम-
कथ न मोदसे वत्स। किमर्थ नैव रञ्जयसे।
नदीतीर समासाद्याऽतृप्तो यासि कथ सुत।

गुरु माहात्म्यवर्णने सचमत्कृति चित्रित माधुर्य दर्शनीयं खलु-

मुनिराज वरो मुनिराज समो
मुनिवेशधरो मतिमानमर ।
मुनिवृन्द मनोगत मोहहर,
भवतात् स गुरुर्मम मोद कर ।।

प्रसगानुसार कवि स्वभाविकतया शब्दालङ् कारान् अर्थालङ् कारान् च प्रयुङ् क्ते। दृष्टव्योहि तत्रैव कश्चन शब्दालकार -

कलिकरालकरैर्न हि कम्पित
कपिकुलाकुल कोमल कानन ।
कमल कोरक कान्त कलेवरो,
भवतु न सुख वैभव दायक ।।

अनुप्रासस्यच्छटा दर्शनीया खलु श्लोकेऽस्मिन्। एकमेव सवैभव कविनाऽऽत्मारामो युगपद् हिमालय समुद्र चन्द्र सूर्यै सहोपमित -

हिमालयात्तुङ गतरश्चरित्रे
शीलेगभीरो हि यथा समुद्र,
सौम्य स्वभावो रजनीश तुल्य ।
स्वतेजसाऽभासत भानुतुल्य ।।

विरोधाभासस्यैकमाकर्षकमुदाहरण द्रष्टव्य तावत्-
महाबली वाऽपि बलैविहीन,
भूपोभवेद्वा भवभूतिहीन ।
नास्तीह लोके पुरूषस्तु कोऽपि
यो दण्डपाणे न करैर्गृहीत ।।

एव यत्र तत्राऽलकाराणाच्छटा स्वाभाविकतया बहुत्र वरीवर्ति।

काव्यमिद शान्त रसमयम्। तस्यादस्यैव रसस्य परिपोषणाय प्रायशस्तादृशा एव विभावादयो वर्णिता -

आत्मा कदाप्यत्र न नाशमेति

नाशं वपूंषि ह्युपयान्ति पुंसाम् ।
आत्मा न नश्यो न जरामुपैति
सदाऽक्षरोऽय प्रलयेऽपि जाते ।।

यद्यपि खण्डकाव्ये महाकाव्य इव कस्यापि वंशस्य कस्यापि जनस्य वा सम्पूर्णं चरित्रं वर्णितं न भवति तथापि यथानाम काव्येऽस्मिन् आचार्य आत्मारामस्य जीवनवृत्तं वर्तते। पुनरपि महाकाव्यमिव चापीदं नास्ति तस्मात् वैविध्य युक्तं खण्डकाव्यमेव धार्यम्। चरित्रचित्रणे कविना नायकस्यैव चरित्रं विविधेन विधिना सम्पोषितम्। चरित्र चित्रणमयमिदं सर्वं तस्मान्न किमपि विशिष्टमस्मिन् विषये वाच्यम्।

वस्तुत काव्यमिदमेकमेव विध कथानकमस्ति यत्र सामान्य इव कश्चनानाथबाल परिस्थितिभि पराभूयमान सन्नपि सद्गुरु सन्निधिं सम्प्राप्य सततं श्रमेण महता तपसा सर्वमपि प्राप्तव्यमवाप्यापि पदमपत्रमिवाम्भसा तेन निर्लिप्त· खलु धर्मोद्धाराय परोपकारायैव जीवनमतिवाहितवान्। अस्य परिशीलनेनावश्य काव्यसुखमात्म सुखं च प्राप्तु मर्हति कोऽपि सहृदय पवित्रात्मा जन ।

सरलया बोधगम्यया गिरयाऽस्यानुवादन कृत्वा श्रीमता डा० सुव्रतमुनिना बहूपकारकमिदं विधाय महानुपकारो विहित पाठार्थिनाम्। गीर्वाणवाण्या एका विशिष्टैव विधा भवति यस्या येन निरन्तरं दुर्भाग्य वर्धते तमा सुरभारत्या । अध्ययनेन कापि विशिष्टानुभूति सम्पद्यते। साम्प्रत संस्कृत मसाम्प्रतमि सम्जात सामजिकाना श्री सुव्रत मुनिना विरचितामनुभाषामधीत्य मूल भाषामत्यधीयते चेदवश्यमात्म सुखमनुभवेयु र्जना । विद्याविनय सम्पन्नस्य श्री सव्रत मुनि महोदयस्य चौद्दश्य सफल सम्पद्येत।

डा० श्रीवत्स शास्त्री
मो० ला० ने० महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

आशीर्वचन

उत्तर भारतीय प्रवर्तक राष्ट्र सन्त पूज्य गुरुदेव श्री भण्डारी पदमचन्द जी "महाराज"

परम श्रद्धेय पूज्य प्रवर गुरुदेव, आचार्य सम्राट, जैन धर्म दिवाकर श्री आत्माराम जी महाराज वर्तमान काल के देदीप्यमान महापुरुष थे। वे योगी ही नहीं योगीश्वर थे। भारत वर्ष की जनता उनके पावन पुनीत चरण कमलो मे अपनी श्रद्धा भक्ति से पूरित अर्घ्य अर्पित समर्पित करती चली आ रही है।

उन धर्म दिवाकर ज्योति पुञ्ज महासाधक के दीक्षा शताब्दी वर्ष मे, प्रौढ विद्वान श्री कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री ने, श्रद्धा पूरित सस्कृत काव्य "आत्मारामीयम्" की सुरचना की है। यह सुन्दर रचना श्रद्धा के अमृत से परिपूत अनिन्द्य भक्ति तत्व से अभिसिक्त है।

इस पावन काव्य मे लेखक ने अपने श्रद्धामय भावो को समष्टि काव्य रुप मे अभिव्यक्त किया है। पूज्य गुरु भगवन्त के उदात्त चरित्र चित्रण का सुन्दर प्रयास है यह कृति । काव्य सुषमा के साथ यह कृति गुण सम्पदा से सम्पन्न है। सस्कृत जगत मे तो इसका सम्मान होगा ही, किन्तु यह सत्कृति प्रत्येक भक्त हृदय मे ज्ञान ध्यान की अभिवृद्धि मे भी सहायक सिद्ध होगी।

इस सुकृति के लेखक श्री कृष्ण दत्त शर्मा शास्त्री की श्रद्धा भक्ति एव मेरे प्रशिष्य डा० श्री सुव्रत मुनि शास्त्री के भक्ति पूरित अनुवाद के लिए उनकी अध्यात्म साधना एव धर्म प्रवृद्धि के लिए हार्दिक आशीर्वचन प्रदान करता हूँ।

श्रीगुरुचरितमाहात्म्यम्

य पठेत्प्रयतो नित्य, श्री गुरोचरित शुभम्।
नश्यन्ति तस्य पापानि, तत्क्षण नात्र सशय।।१।।

पूज्य गुरुदेव आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज के इस पावन चरित्र को जो नित्य श्रद्धा भक्ति पूर्वक पढेगा, तत्क्षण उसके पाप नष्ट होगे इसमे कोई सशय नहीं है।

सिद्ध्यन्ति सर्व कार्याणि, जीवन सुखद भवेत्।
क्लेशाश्चैव तु दु खानि, शाम्यन्ति स्वयमेव हि।।२।।

उसके सभी कार्य सिद्ध होगे और जीवन सुखी बनेगा सब दु ख और क्लेश स्वय ही शान्त हो जाएँगे।

अर्थार्थी लभते चार्थ, वाञ्छित सुस्थिर शुभम्।
लब्ध्वा धन सपत्नीको, भवेन्ना शुभकर्मकृत्।।३।।

जो धन का इच्छुक होगा उसे सुस्थिर शुभ धन का लाभ होगा, धन प्राप्त करके वह दम्पत्ति अशुभ कर्म करने वाला न हो।

ज्ञानार्थी ज्ञानसम्पन्नो जायते पठनादिदम्।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति, वशवृद्धिकरो धनी।।४।।

ज्ञान का अभिलाषी कोई व्यक्ति यदि पावन श्री गुरुदेव के चरित्र का पारायण करेगा तो उसे अवश्य ही अभीष्ट ज्ञान लाभ होगा। जो पुत्र की इच्छा से इसे पढेगा उसे वश वृद्धि करने वाले पुत्र धन की प्राप्ति होगी।

श्री गुरोश्चरित पुण्य सर्वसौख्य प्रदायकम् ।
प्रात काले निशायावा, पठनीय सदा बुधै ।।५।।

सर्व सुखो को देने वाला श्री गुरुदेव का यह पावन चरित्र प्रात काल अथवा सायकाल बुद्धिमानो को अवश्य पढना चाहिए।

य पठेच्छ्‌द्धया नित्य, स भवेद् गुणवान्नर. ।
सुखी, पुत्री, धनी, मानी, ज्ञानी सत्यपरायण ।।६।।

जो इस पुनीत श्री गुरु चरित्र को श्रद्धापूर्वक नित्य पढेगा, वह पुरुष, सुखी, पुत्रवान, धनी, मानी, ज्ञानी और सत्य परायण आदि गुणो वाला होगा।

यश्च कश्च नरोभक्तो धनवान् निर्धनोऽपिवा ।
पठति श्रद्धयोपेत, प्राप्नोति वाञ्छित फलम् ।।७।।

जो कोई भी भक्त धनवान अथवा निर्धन श्री गुरुदेव इस विशुद्ध के चरित्र को श्रद्धा भक्ति से पढता है वह मनोवाञ्छित फल को पाता है।

अतो नित्य पठेद् वाऽपि, श्रावयेश्च्छृणुयादिदम् ।
शुभा शान्ति यश पुण्य, प्राप्स्यति भुवि निश्चितम् ।।८।।

इसलिए इसे नित्य पढना चाहिए अथवा सुनना और सुनाना चाहिए इससे निश्चय ही शुभशान्ति, यश और पुण्य की प्राप्ति होगी।

आत्मारामीयम्

१
प्रवेशः

वीतरागी क्षमाशील, श्चाहिंसा सत्यपालक ।
ऐन्द्र सुख परित्यागी, रक्षतु सकलज्जगत् । ।१ । ।

वीतरागी और क्षमाशील, अहिंसा, सत्य एव धर्म पालक, इन्द्र पद के सुखो का भी परित्याग करने वाले भगवान समस्त विश्व की रक्षा करे।

श्वेताम्बरोनिरातङ्को, निर्भयो गतकल्मष ।
वर्धमानो महावीरो, रक्षतु न पदे पदे । ।२ । ।

आतक से रहित, भय से दूर और पाप कालिमा से दूर भगवान् महावीर स्वामी हमारी पद-पद पर रक्षा करे।

यथोदेत्य महातेजा, भास्करो निज रश्मिभि ।
नाशयित्वा महाध्वान्तञ्चैतन्यञ्च प्रयच्छति । ।३ । ।

जैसे महातेजस्वी सूर्य अपनी रश्मियो के साथ उदित होकर काली रात्रि के महान्धकार को नष्ट करके, ससार को प्रकाशित करके चैतन्यमय बना देता है।

तथैवाऽसौ महावीरो, वर्धमानो गतस्पृह ।
लोकाऽज्ञानतमो हर्ता, ज्ञानदानऽ्करोत न । ।४ । ।

उसी प्रकार लोक के अज्ञान रूपी अन्धकार को हरने वाले, निष्कामी वर्धमान महावीर स्वामी हमे ज्ञान दान करे।

जगत्पीडाप्रशान्त्यर्थं हात्वा राज्य सुखानि च।
प्राव्रजद्धि गृहाद्यस्तु, सभवेद् भव भूतये।।५।।

इस ससार के दु खो को दूर करने के लिए शान्ति देने के लिए, अपने राज्य सुखो का परित्याग करके, जो गृह से निकल कर सन्यास मार्ग मे प्रवर्जित हुए, वे भगवान् महावीर स्वामी ससार का कल्याण करे।

जन्ममरणयो प्रीति, नैसर्गिकी स्वभावजा।
यदा जन्म तदैवाऽत्र, सृज्यते मरण नृणाम्।।६।।

जन्म और मरण की स्वभाविक प्रीति है, यहॉ जब मनुष्य का जन्म होता है, तभी उसका मरण भी निश्चित हो जाता है।

म्रियन्ते ते नरा लोके, ये न सन्त्युपकारिण।
परोपकारिण पुस, सदा जीवन्ति भूतले।।७।।

ससार मे उन्हीं लोगो का मरण होता है, जो परोपकारी नहीं होते। जो परोपकार-परायण होते हैं, वे तो सदा जीवित रहते हैं।

जीवनन्तु प्रशस्यन्तद् यद् भवेत्परहेतवे।
स्वहितार्थाय जीवन्ति, काककुक्कुरशूकरा।।८।।

वही जीवन प्रशसा योग्य होता है, जो परहित मे निरन्तर लगा रहता है। अपने स्वार्थ के लिए तो कौए और कुत्ते भी जीते हैं।

तिष्ठन्ति शूकरा श्वान गृध्राश्चिल्लाश्च वायसा।
जानन्ति नोपकारन्ते, केवल स्वोदर भरा।।९।।

सूअर, कुत्ते, गृद्ध, चील, और कौवे भी केवल अपना अपना पेट भरते हुए जीते हैं, किन्तु वे परोपकार को नहीं जानते।

देशजातिहितार्थाय, येश्वसन्ति महाशया.।
स्मृयन्ते ते जनाअत्र, मानवै शुद्धमानसै ।।१०।।

देश और जाति के हित एव कल्याण के लिए जो यशस्वी मानव-जीवन धारण करते हैं, शुद्ध हृदय वाले मनुष्यो के द्वारा यहाँ उन्हीं का स्मरण किया जाता है।

स्वय कष्टान्यसह्यानि, सहन्ते परहेतवे।
भवन्ति ते सदा वन्द्या, यथा देवो महेश्वर ।।११।।

दूसरो के हित साधन के लिए जो स्वय असऽय कष्टो को सहन करते हैं, वे सदैव वन्दनीय और पूजनीय होते हैं। जैसे कि महादेव भगवान शिव सारे लोक के पूज्य हैं।

ज्योति प्रद परार्थाय, दु खाऽज्ञानतमोहरम्।
जीवन दीपक कृत्वा, यो जीवति स जीवति।।१२।।

जो दूसरो के दु ख और अज्ञान रूपी अन्धकार को हरने के लिए, अपने जीवन को दीपक के समान प्रकाश देने वाला बनाकर जीते हैं, वास्तव मे उन्हीं का जीना सफल है।

जगद् दु ख विष पीत्वा, यच्छन्ति ये सुखामृतम्।
पुण्यश्लोका महाभागा, जायन्ते ते यदा कदा।।१३।।

जो इस ससार के दु ख रूप विष को पीकर भी, सुख का अमृत प्रदान करते हैं, ऐसे पुण्यशाली, महाभाग्यवान, महापुरुष कभी कभी ही यहाँ उत्पन्न होते हैं।

एतेषा ज्ञानवृध्दाना, हृदय कुसुमान्मृदु।
परदु खाग्नि सतापाद् द्रवते शतधा स्वयम्।।१४।।

ऐसे ज्ञानी, ध्यानी, परोपकारी महामानवो का हृदय फूल से सुकोमल होता हैं, जो कि दु ख-पीडित लोगो को देखकर, स्वय ही उनके दु ख से दुखी हो उठते हैं।

बहुकाले गते लोके पूतात्मा पुण्यकर्मकृत् ।
सर्वलोके हितार्थाय, जायते नर पुगव ।।१५।।

बहुत समय बीत जाने पर इस विश्व मे कोई उच्च, सस्कार सम्पन्न, पुण्यवान, पवित्र-आत्मा, समस्त लोक की हित पूर्ति के लिए नर श्रेष्ठ व्यक्ति जन्म लेता है।

मायामोहाब्धिमग्नाना, नानाक्लेशसमन्विताम् ।
अज्ञानतिमिरान्धाना, समुध्दर्ता प्रजायते।।१६।।

माया मोह से ग्रस्त लोगो को धर्म का उपदेश देकर तथा वासना रूपी कीचड मे फसे हुए लोगो को ज्ञान का अवलम्बन देकर उनका उद्धार करते हैं।

एतादृशो गुरुश्रेष्ठ, कोऽपि त्यागतपो वलै ।
पूर्णो दयाक्षमाशौचै, मैत्रीप्रेम कृपाशमै ।।१७।।

ऐसे श्रेष्ठ गुरुवर, त्याग-तप के धनी, दया, क्षमा, शुचिता, मैत्री, प्रेम, शाति और कृपालुता से परिपूर्ण होते हैं।

उपदिशन्नरान्धर्मम्, माया-रूपविमोहितान् ।
उद्धरति जनान्पकाद्, दत्वा ज्ञानावलम्बनम्।।१८।।

माया मोह से ग्रस्त लोगो को धर्म का उपदेश देकर तथा वासना-रूपी कीचड मे फँसे हुए लोगो को ज्ञान का अवलम्बन देकर उनका उद्धार करते हैं।

जयन्ति ते महाभागा, कारुण्यामृतसागरा ।
छिन्दन्ति ये महापाशान्, मायामोहवता नृणाम्।।१९।।

जो महापुरूष मोह माया के बन्धनो मे जकडे हुए लोगो को बन्धन मुक्त करते है, करुणा रूपी अमृत के सागर के समान ऐसे उत्तम पुरुषो की ही जय-जय कार होती है।

एतेष्वेव गुणज्ञेषु, जैनधर्म दिवाकर ।
आसीत्पूज्यतमो लोके, आत्मारामो महामुनि ।।२०।।

ऐसे ही गुणवान एव गुणज्ञ, लोक पूज्य महापुरूष थे महामुनीश्वर, जैन धर्म दिवाकर, पूज्यवर आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज।

२
उद्भव.

जैनाचार्यो गुणगणधरोवीतरागस्तपस्वी,
सत्याऽहिसाव्रतपरिचर सर्वमित्रो मनस्वी।
विद्याविज्ञ परिमलयशा सेव्यमान स्वशिष्यै,
रात्मारामो वितरतु सदा ज्ञान-विज्ञान-विद्या ।।१।।

विविध गुण समूह को धारण करने वाले, वीतराग पथ के अनुयायी, अनुपम तपस्वी, सत्य-अहिसा आदि पॉच महाव्रत पालक, प्राणी मात्र के मित्र, अद्भुत मनस्वी, अध्यात्म विद्या के विज्ञाता, निर्मल यशस्वी, अपने सुशिष्यो द्वारा सेवित, जैन धर्म दिवाकर, आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी विविध विद्याओ का ज्ञान-विज्ञान वितरित करे।

सन्ति प्रदेशा बहवोऽत्र देशे,
सर्वे प्रसिद्धा स्व गुणै र्विशिष्टै ।
कश्चित्तुतेषा धन-धान्य-वृद्ध
कश्चित्प्रकाम पुरुषार्थपन्न ।।२।।

हमारे इस भारत देश मे बहुत प्रदेश है, वे सभी अपने-अपने विशिष्ट गुणो के कारण प्रसिद्ध हैं। उनमे से कुछ तो धन-धान्य से समृद्ध है और कुछ अपने प्रबल पुरूषार्थ के लिए प्रख्यात है।

सारस्वतैरात्मविचार दत्तै
रौदार्यसौहार्द पवित्र चित्तै ।
असारससार सुखेष्वसक्तै
पुम्भि प्रदेशो ननु शोभतेऽत्र।।३।।

कोई प्रान्त अपने सारस्वत आत्मविचारो की दक्षता, अनुपम उदारता एव सहृदयता

से पवित्र बने चित्त और इस असार ससार के सुखों में अनासक्त बने हुए पुरूषो से सुशोभित है।

प्रान्तस्तथा पञ्चनद' प्रसिद्ध,
कर्मस्थली यो महता जनानाम्।
श्रीनानकोऽप्यत्र गुरु गुरूणाम्,
भूमि पवित्रा कृतवान् स्व कृत्यै ।।४।।

पजाब प्रान्त जोकि अपनी वैभव-सपन्नता, आध्यात्मिकता और उदारता के लिए प्रसिद्ध है, वह अनेक महापुरुषो, देश भक्तो एव वीरो की कर्म भूमि है। सन्त गुरु नानक देव जी ने भी इस प्रान्त को अपने सत्कर्मों से पवित्र किया था।

प्रान्तस्य वै पञ्चनदस्य चास्य,
जनान्महामोहसमुद्रमग्नान्।
उद्धर्तुकामो गहनान्धकारा
ज्जिनेन्द्र देव स्वयमाजगाम।।५।।

महा मोह के समुद्र मे डूबे हुए, तथा गहन अज्ञान के अन्धकार मे भटक रहे लोगो का उद्धार करने के लिए भगवान, जिनेन्द्र देव, श्री महावीर स्वामी स्वय पधारे थे।

भानुर्यथोदेत्य तम समूलञ्,
छित्वा जनाञ्चेतनता ददाति।
तथैव कारुण्यमयस्तपस्वी
पुसाम्महामोहतमो जहार।।६।।

जैसे सूर्य उदय हो कर रात्रि के अन्धकार को समूल नष्ट करके मानवमात्र मे नव चेतना भर देता है, वैसे ही करूणा सागर, परमतपस्वी, भगवान् महावीर ने मानवो के महामोह को दूर किया था।

ग्रह-गुण-निधिभूमीसयुते वैक्रमाब्दे,
सघनजलद वृन्दै रावृत्तो भाद्रमास ।
निशिकरकरपूर्णे शुक्लपक्षे विशुद्धा,
सुतिथिरपि तदासीद् द्वादशी पुण्यपूर्णा । ।७ । ।

सवत् १९३९ मे भाद्रपद का महीना, बडे-बडे बादलो के समूहो से घिरा हुआ था और शुक्ल पक्ष की पुण्य तिथि द्वादशी आई हुई थी।

तस्मिँस्तिथौ पुण्यमये पवित्रे,
जालन्धराख्यस्य महापुरस्य ।
राहो इति ग्रामयश प्रसिद्धम्
ग्राम स बाल समलञ्चकार । ।८ । ।

इस पवित्र पुण्यमयी तिथि मे जालन्धर जनपद के प्रसिद्ध (किवदन्ती के अनुसार जिसमे कभी भगवान श्री राम भी पधारे थे) राहो नामक नगर को सुसस्कारित बालक आत्माराम ने जन्म लेकर अलकृत किया।

सक्षत्रियाणाड् कुलभूषणस्य,
रामस्य गेहम्मनसाभिधस्य ।
स्वबाललीलाऽमृतवर्षणेन,
क्लिन्नञ्च तृप्त सुतराञ्चकार । ।९ । ।

उस बालक का पिता क्षत्रिय कुल के आभूषण श्री मनसाराम जी को होने का गौरव प्राप्त हुआ और इस बालक ने बाल लीलाओ की अमृत-वर्षा से बहुत अच्छी प्रकार से उन्हे तृप्त किया।

माता तु देवी परमेश्वरी सा,
भेजे प्रमोद तनय ह्यवाप्य ।
माता सुत क्रोडगत निरीक्ष्य,
ननाम देवान्निजवशमान्यान् । ।१० । ।

माता श्री मती परमेश्वरी देवी ने ऐसे सुलक्षण, सुन्दर और स्वस्थ बालक को पाकर अतीव प्रसन्नता का अनुभव किया। वह माता अपने पुत्र को गोदी मे क्रीडा करते हुए देख कर नित्य प्रति अपने वश पूजित देवताओ को नमस्कार करती थी।

मातेश्वरी श्री परमेश्वरी सा,
स्वाड्के स्वकीय तनय निधाय।
पूज्यान् स्ववश्यान्मनसा प्रणम्य,
चुचुम्ब पुत्राननचन्द्रबिम्बम्।।११।।

विशाल मस्तक, मक्खन के समान सुकोमल अगों और सुन्दर गौर रग वाला वह बालक जब अपनी माता की गोदी मे आता था, तब उसकी अनुपम छवि को देख कर वह अत्यन्त प्रसन्न होती थी।

स्व मातुरुत्सगगत स बालो,
विशालभाल सुकुमारगात्र
वर्णेन गौरो नवनीततुल्यो
मातु र्मनो मोदभरञ्चकार।।१२।।

वह श्री मती माता परमेश्वरी देवी अपने उस प्रिय पुत्र को अपनी गोदी मे बैठाती थी और फिर अपने कुल परम्परा द्वारा पूजित देवी देवताओ को मन ही मन नमस्कार करके, अपने पुत्र के मुखचन्द्र का बडे प्यार से चुम्बन करती थी।

३

"नश्वरताबोधोदयम् "

सुधाकर सौम्यतम सुरम्यो
विधौ विरुद्धे निजभाग्यदोषात् ।
सुरद्विषा राक्षसराहुणाऽसौ,
सतुद्यते पूर्णकलो हिमाशु ।।१।।

सुधाकर की अमृत सम किरणो वाला अतीव सौम्य और रमणीय चन्द्रमा अपने दुर्भाग्योदय से विधि के विरुद्ध हो जाने पर, देवताओ से द्वेष करने वाले राक्षस राहु के द्वारा सम्पूर्ण कलाओ से युक्त होते हुए भी ग्रसित हो जाता है।

असूय पुत्र परमेश्वरी सा,
देवी सुसाध्वी ममतामयी मा ।
निजात्मज त करुण रुदन्तम्
विहाय तूर्ण त्रिदिवञ्जगाम।।२।।

देवी के समान पूज्या, साध्वी जैसे आचार और सयम मे रुचि रखने वाली, लक्ष्मी के समान सुन्दर लक्षणो से युक्त, ममतामयी वह मॉ परमेश्वरी देवी अपने उस पुत्र को जन्म देकर और कुछ दिनो के बाद उसे रोता हुआ छोड कर स्वय देव लोक को प्रयाण कर गई।

द्वितीये वत्सरे याते, मातृहीन स बालक ।
पितृ प्रेम पराधीनो, जीवन कि स अन्वभूत्।।३।।

अभी उस बालक आत्माराम को जन्म लिये दो वर्ष ही व्यतीत हुए थे कि उसकी माता का वियोग हो गया। माता विहीन वह बालक अपने पिता के वात्सल्य प्रेम के सहारे जीवन व्यतीत करने लगा।

दौर्भाग्यवह्निज्वलिताग यष्टि,
र्यत्रापि कुत्रापि गतो भवेद्धि।
तत्रैव दुर्दैवहतो मनुष्यो,
दु ख ह्यवाप्नोति सुख न किञ्चित् ।।४।।

दुर्भाग्य रूप अग्नि से पीडित व्यक्ति जहॉ कहीं भी चला जाए, वह अपने दुर्दैव के कारण वहीं दु ख ही दु ख पाता है, किचित् मात्र भी सुख उसे नहीं मिलता।

ज्ञातु न शक्तो गणकोऽपि सिद्धो,
विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि।
जानन्ति विज्ञा सुविचक्षणाश्च,
स्वकर्मसूत्रग्रथितो मनुष्य ।।५।।

नियति के विचित्र विधान को सिद्ध ज्योतिषी भी जानने मे समर्थ नहीं है। विद्वान, ज्ञानी और ध्यानी पुरुष यह भली भॉति जानते हैं कि मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मों से बधा हुआ है।

मायाविहीन सुकुमारबाल,
पितु प्रयत्नान्नववर्षकोऽपि।
नाऽभूद् यदा तस्य पिता तदैव,
हात्वा सुत देवगृहञ्जगाम।।६।।

माता के वात्सल्य से वचित वह बालक अभी नौ वर्ष का भी नहीं हुआ था, कि तभी उसके पूज्य पिता जी भी उसे उसके हाल पर छोड कर स्वर्गवासी हो गए।

मात्रा वियुक्तो जनकेन हीनो,
ह्यनाश्रयो लक्ष्यविहीनकर्मा।
इतस्ततोऽसौ निज बान्धवेषु,
बभ्राम गेण्डूकसमो निरीह ।।७।।

ममता रूपी माता के दुलार से वियुक्त और पिता के प्यार भरे संरक्षण से विहीन

बना वह बालक अनाथ होकर लक्ष्य भ्रष्ट गेद की भाति बन्धु-बान्धवो, रिश्तेदारो के यहाँ इधर उधर निरीह सा होकर भटकने लगा।

पिता महीप्रेममयी सुजीर्णा,
पुपोष पौत्र मनसा स्व शक्त्या।
विस्मृत्य सौख्यानि निजेन्द्रियाणाम्,
पौत्रस्य सौख्येषु सुख ह्यजानात्।।८।।

प्रेम भरी अत्यन्त वृद्धा दादी माँ अपने सुख-दुख की परवाह न करते हुए, अपने पौत्र के सुख को ही सुख मानते हुए, अपनी शक्ति के अनुसार उसका पालन-पोषण करने लगी।

पितामहीदत्तसुखानि वीक्ष्य,
क्रूरा गति नैव बभूव तुष्टा।
दुष्टातिरुष्टा करुणा वियुक्ता,
पितामहीञ्चापि जहार तस्य।।९।।

परन्तु दादी माँ द्वारा प्रदत्त सुखो को देखकर क्रूर गति प्रसन्न न रह सकी, उसने नाराज हो कर निर्दयता पूर्वक उस बालक की दादी को भी उससे छीन लिया।

मातुर्वियोगो जनकस्य हानि,
पितुश्च मातु स्त्रि दिव प्रयाणम्।
समेत्य बाल विपदा पयोधा
वाकण्ठ मग्न सबल हि चक्रु ।।१०

ममतामयी मातेश्वरी का वियोग, पिता के सरक्षण की हानि, दादी का स्वर्गगमन, इन सब विपत्तियो ने अपनी पूर्ण शक्ति के साथ उस सुकोमल मति वाले बालक को दु ख सागर मे डुबो सा दिया। इससे उस बालक को ससार की नश्वरता का बोध हो गया।

४

वैराग्यम्

क्वचिन्निरीहो ननु 'वज्रवाडाम्'
जलन्धरीया नगरीं क्वचिच्च।
क्वचिन्महातालवन प्रसिद्धम्,
जगाम, बभ्राम विनाऽऽश्रयत्वम्।।१।।

विपदाओ से निरीह बना वह बालक आत्माराम कभी बजवाडा तो कभी जालन्धर और कभी तलवत नामक नगर मे बिना किसी आश्रय के घूमने लगा।

पितृव्य पत्नी मृदुलस्वभावा,
पुपोष बाल करुणार्द्रचित्ता।
मन परञ्चास्य तु बालकस्य,
मनाड् न रेमे जगत प्रपञ्चे।।२।।

करुणामयी, मधुर स्वभाव वाली, उस बालक आत्माराम की चाची वहाँ उसे मिल गई और उसे बडे प्यार दुलार के साथ अपने साथ ले जाकर उसका पालन पोषण करने लगी, परन्तु उस होनहार बालक का मन ससार के प्रपचो मे नहीं लगा।

स गौरवर्ण सरल स्वभावो
भव्याकृति पूतचरित्रनाथ।
जिज्ञासमानो जगत प्रपञ्चम्,
ज्ञात्वा स बालो विमुखीबभूव।।३।।

गौरवपूर्ण, सरल स्वभाव, भव्य, सुन्दर आकृति तथा पावन पवित्र चारित्रवान उस बालक ने ससार के प्रपच को जाना और ससार से विरक्त हो गया।

तत समागत्य स बाल बुद्धि,
ससार राग विपद विभाव्य।

विच्छेत्तुकामो विपदा समूह,
जात कुमार शुभकर्मशील ।।४।।

तभी से लेकर वह बालक ससार के स्नेह को विपत्ति का कारण जानकर, उन विपत्तियो के समूह को नष्ट करने वाले शुभ कर्मों मे प्रवृत हो गया।

स आत्मरामो नयनाभिराम,
शान्तस्वभावो गतमोहकाम ।
ससाररागान्नितरा विरक्तो,
ह्यध्यात्मविज्ञानधरामवाप।।५।।

नयनाभिराम अर्थात् जिसके दर्शन मात्र से ऑखे तृप्त हो जाती थीं, ऐसा वह सुसस्कारी बालक आत्माराम अपने शात स्वभाव, मोहभाव से रहित और ससार के राग रग से पूर्णतया विरक्त होकर अध्यात्मविज्ञान की मनो भूमि की ओर चल पड़ा।

निवर्तते मूढजन सदैव,
कर्तव्यमार्गादजितेन्द्रियो वै।
विपत्पयोधौ पतितोऽपि धीर,
कर्तव्यमार्गं न जहाति विज्ञ ।।६।।

मूर्ख लोग अपने कर्त्तव्य-पथ से सदा ही भ्रष्ट रहते हैं। किन्तु जितेन्द्रिय महापुरुष विपत्तियो द्वारा नीचे गिराए जाने पर भी अपने कर्त्तव्य का परित्याग नहीं करते।

महाशया ज्ञानधना सुशीला,
कालद्धि पूर्वं गुरुता भजन्ते।
रसालभाव रसता च तस्य,
पुष्पाणि पूर्वं हि विभावयन्ति।।७।।

महायशस्वी, ज्ञान के धनी, शीलवान महापुरुष समय से पूर्व ही महत्ता और गुरुता को प्रकट कर देते हैं जैसे आम की मजरी, आम के फल से पहले ही आम की मादकता

को प्रकट कर देती है।

क्षुद्रेऽपि बीजे विटपो विशाल
सँल्लक्ष्यते नैव जनैर्विमूढै ।
विज्ञानदक्षै सुविचारकैश्च,
तल्लक्ष्यते वै ह्यनुभूयते च।।८।।

जो अज्ञानी लोग होते हैं, वे वट वृक्ष के छोटे से बीज मे वट वृक्ष की विशालता को नहीं देख पाते, किन्तु जो सुविचारक और विशिष्ट ज्ञानी महापुरूष होते हैं, वे उसकी विशालता को, बीज को, देख कर ही अनुभव कर लेते है।

५
सौभाग्यम्

रत्नप्रभा रत्नविदो विदन्ति,
तत्ज्ञानशून्या पुरुषा न चान्ये।
तन्मृग्यते विज्ञजनै सदैव,
लब्ध सुरत्न किल रक्ष्यते तै ।।१।।

रत्न की चमक का मूल्याकन उसकी महत्ता को जानने वाले जौहरी पुरुष ही कर सकते है, दूसरे उसके ज्ञान से रहित पुरुष नहीं। इसलिए जो विज्ञानी पुरुष है, वे ही रत्नो की खोज करते है, उसे प्राप्त करके उसकी रक्षा भी वही करते है।

रामजस महाभागै, सार्ध बालो ह्यमन्दधी ।
अकार्षीत् सगतिम्प्रायो, जिन धर्म विदा नृणाम्।।२।।

प्रखर प्रतिभा और प्रज्ञा सम्पन्न वह बालक आत्माराम श्री रामजस महानुभाव के साथ जैन धर्म के मर्मज्ञ पुरुषो की सगति करने लगा।

सत्सगते र्विपाकन्तु, जानन्ति सर्व एव हि।
दुष्टोऽपि सगतिम्प्राप्य, दौर्जन्य विजहाति स्वम्।।३।।

सत्सगति का परिणाम तो सभी जानते हैं। सत्सग को प्राप्त करके दुर्जन भी अपनी दुष्टता को छोड देता है।

ऋषीणा शुद्ध सत्त्वाना, प्राणि मात्रोपकारिणाम्।
नाम स्मरण मात्रेण पुस शुद्ध्यति मानसम्।।४।।

प्राणी मात्र पर उपकार करने वाले, शुद्ध सत्त्व वाले महर्षि की सगति की तो बात ही क्या, उनके तो नाम स्मरण मात्र से ही मानवो का हृदय पवित्र हो जाता है।

चेद्धि नाम फल पुण्य, दर्शनाना तु का कथा।
तेषा यदि कृपा स्यात्तु, मुक्तिमर्नास्त्यति दुर्लभा।।५।।

जिन महापुरुषो के नाम स्मरण से ही इतना पुण्य होता है, उनके दर्शनो के फल का तो कहना ही क्या? यदि उनकी कृपा हो जाए तो फिर मुक्ति प्राप्त होना भी कोई दुर्लभ नहीं है।

अमोघ फलदा प्रोक्ता, सेवा ज्ञानवता नृणाम्।
विदित्वैतत्कुमारोऽसौ, गुरु सेवारतोऽभवत्।।६।।

ज्ञानी महापुरुषो की सेवा अमोघ फल देने वाली कही गई है, ऐसा जानकर वह सुकुमार बालक आत्माराम गुरुजनो की सेवा मे सलग्न हो गया।

गुरुपादारविन्द स, मेने सिद्धिप्रदम् शुभम्।
शान्तिद ज्ञानद शुद्धमात्माऽज्ञानतमोहरम्।।७।।

गुरु चरण कमल प्रताप से मोक्ष प्राप्ति सुलभ हो जाती है, उसी से शान्ति, ज्ञान और आत्मा की शुद्धि होती है तथा अज्ञान अन्धकार नष्ट हो जाता है। ऐसा बालक आत्माराम को दृढ विश्वास था।

आत्मारामो महाप्रज्ञम्मनस्तापहर गुरुम्।
प्रणम्य दूरतो मूर्ध्ना, प्राप शान्तिकर सुखम्।।८।।

महाप्राज्ञ, मन के सन्ताप को हरने वाले, शान्ति और सुख के दाता, महान् गुरु को दूर से सिर झुका कर प्रणाम करके बालक आत्माराम मानसिक आह्लाद को प्राप्त करता था।

कलाधर पूर्णकलासनाथन्,
ताराधिप स्वामिनमौषधीनाम्।
आकाशपीठासनराजमानम्,
विलोक्य चन्द्र प्रथते समुद्र।।९।।

विविध कलाओ के धारक, नक्षत्रो के स्वामी, अपनी सपूर्ण कलाओं से युक्त, अनेक औषधियों के पालक, आकाश मडल में सुशोभित पूर्ण चन्द्रमा को देख कर समुद्र उसे पकडने के लिए आगे बढता है।

समस्त विद्यार्जनशक्तिपूर्णम्,
दयाक्षमौदार्यशमावतारम्।
बाल्येऽपि गाम्भीर्यनिधिं दधानम्,
सम्प्राप्य बालम्मुमुदे मुनिस्तम्।।१०।।

समस्त विद्याओ को ग्रहण करने मे समर्थ, अनुपम शक्ति सम्पन्न, दया क्षमा उदारता, शमदम के अवतार स्वरूप अल्पायु मे भी गाम्भीर्य के खजाने को धारण करने वाले बालक को प्राप्त करके मुनिवर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

यथा यथाऽसौ महताम्महीयसाम्,
सताञ्जनाना सुगति सिषेवे।
तथा तथाऽसौ जगत प्रपञ्चन्,
मन स्वकीय विमुखीचकार।।११।।

जैसे-जैसे उस बालक को महायशस्वी महापुरुषो की उच्च सगति मिलती गई, वैसे-वैसे वह अपने मन को जगत के प्रपञ्चो से विमुख बनाता गया।

सम्प्राप्ते द्वादशे वर्षे, आत्मारामो जितेन्द्रिय ।
ससारबन्धसन्त्रस्तो, बभूव शान्त्युपासक ।।१२।।

बारह वर्ष की आयु होने पर बालक आत्माराम जितेन्द्रिय बनकर, ससार के बन्धनो से सत्रस्त होकर शान्ति उपासक बन गया।

निर्व्याजो निश्छल सौम्य, प्रकृत्या सरलो मृदु ।
जिज्ञासुर्धर्मतत्त्वाना, मैच्छच्छ्रेष्टतम गुरुम्।।१३।।

यथार्थवादी, छल से रहित, सौम्य आकृति, सरल प्रकृति, मृदु-मधुर स्वभाव और धर्म के तत्वो को जानने के इच्छुक उस परम पुण्यवान बालक आत्माराम ने श्रेष्ठ गुरुदेव जी महाराज को प्राप्त करना चाहा।

पुण्यश्लोकम्महाधीर, जैनधर्म दिवाकरम्।
शालिग्राम गुरुम्प्राप्य कुमारस्तोषमावहत्।।१४।।

पुण्यशाली, महाधैर्यवान, जैन धर्म दिवाकर अर्थात् सूर्य के समान जैन धर्म का सर्वत्र प्रकाश-प्रसार करने वाले, महाप्रतापी पूज्य श्री शालिग्राम जी महाराज जैसे महान् गुरु को प्राप्त करके, बालक आत्माराम सन्तुष्ट हो गया।

अशान्तचित्तश्चिरशान्तिकाम,
बाल्येऽपि बालो जरस दधान।
अध्यात्मतत्त्व परम पवित्रम्,
स आत्मरामो यतते स्म लब्धुम्।।१५।।

अशान्त चित्त होने के कारण स्थाई शान्ति को चाहने वाला बाल्यावस्था मे भीवृद्धत्व को धारण करने वाला अर्थात् बाल्यकाल मे भी वृद्धो जैसी धीरता, गभीरता से मडित था। परम पवित्र अध्यात्म तत्त्व को प्राप्त करने के लिए बह बालक आत्मा राम निरन्तर प्रयत्न करता था।

गुरो कृपालोश्चरणौ गृहीत्वा,
स आत्मरामो निजगाद चेत्थम्।
गुरो! कृपालो! भव मे दयालु,
नान्या गति मे शरणागतोऽस्मि।।१६।।

परम विनीत उस बालक आत्माराम ने महान् कृपालु, परम पूज्य गुरु महाराज के पावन चरण पकड कर इस प्रकार प्रार्थना की कि हे कृपा निधान गुरुदेव! मै आपकी शरण मे आया हूँ। आप कृपा करके मुझे शरण प्रदान करे। आपके बिना मुझे और कोई शरण नहीं है।

तमात्मराम करुणार्द्रचित्तम्,
दयाक्षमौदार्यघनिष्टमित्रम्।
ससारमोहान्नितरा विरक्तम्,
विज्ञाय सूरिर्मुमुदे, मनस्वी।।१७।।

करुणार्द्र चित्त वाले उस परम विनीत बालक आत्माराम को दया, क्षमा, उदारता का घनिष्ट मित्र और ससार के मोह माया से नितान्त विरक्त जान कर मनस्वी गुरुदेव धर्माचार्य श्री शालिग्राम जी महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए।

सकलगुणगणाढ्य स्त्यागवृत्तिर्महात्मा,
श्रमणगणसुपूज्य सर्वथा शान्तचित्त ।
गिरिसमदृढभावश्चन्द्रतुल्य सुसौम्य,
तमुपगतमवादीत्प्रेम पीयूषवर्षी।।१८।।

सकल गुण गणो के पुञ्ज, त्याग तप वृत्ति धारक महामुनि, श्रमण समूह द्वारा सुपूजित, सर्वथा शान्त रहने वाले, पर्वत के समान दृढ श्रद्धा भाव से परिपूर्ण, चन्द्रमा के समान अतीव सौम्य आकृति वाले महामुनि पूज्य श्री शलिग्राम जी महाराज, अपनी शरण मे आए हुए उस सरल मना बालक से अमृतमय प्रेम भरी वाणी मे बोले।

वैराग्यमार्ग सुकरो न वत्स,
कष्टप्रदोऽय ह्यसिधारधावनम्।
नैके जना मार्गगता महान्त,
ससार रागेषु पुन प्रवृत्ता।।१९।।

हे वत्स! वैराग्य का मार्ग इतना सरल, सुगम नहीं है, यह बहुत ही कष्टप्रद और तलवार की धार पर चलने के समान दुर्गम है। इसीलिए अनेक महापुरुष इसे अपना कर भी पुन पथ-भ्रष्ट होकर ससार के राग-रग मे प्रवृत्त हो गए हैं।

यथा चतुर्भि कनक परीक्ष्यते,
परीक्षितोऽभूद् गुरुणा तथैव।
निरूप्य बाल परम विशुद्धम्,
त दीक्षितु स स्व मतिञ्चकार।।२०।।

जैसे बुद्धिमान जौहरी सोने की परीक्षा करते हैं, उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव जी म० ने उस परम पुनीत बालक की परीक्षा करने के उपरान्त, जब उसे वैराग्य के रग मे दृढ पाया, तभी उसे दीक्षित करने की आज्ञा दी अर्थात् अपने पास रख लिया।

६
"दीक्षोत्सव"

यदासीदात्मरामोऽसौ, द्वादशवर्षचुम्बित ।
कौमार्ये प्राप्तवान् दीक्षा, 'शालिग्राम' गुरोस्तदा ।।१।।

जब वह पुनीत आत्मा आत्माराम १२ वर्ष का हुआ, तभी वह कुमारावस्था मे ही पूज्य प्रवर गुरुदेव श्री शालिग्राम जी म० के चरणो मे दीक्षा लेकर और मुनि श्री आत्माराम जी म० बन गए।

आत्मकन्या निधिब्रह्ममिते सम्वत्सरे शुभे।
आषाढशुक्लपञ्चम्या दीक्षामाप कुमारक ।।२।।

पावन पुनीत आत्मा वैरागी आत्माराम जी ने विक्रम सवत् १९५१ की आषाढ शुक्ल पचमी को दीक्षा धारण करके सयम जीवन स्वीकार कर लिया।

'बनूडा' स्व्यम्महा क्षेत्र, प्रान्ते पञ्चनदे शुभे।
तपस्विना निवासेन, सञ्जात स्वर्गसन्निभम्।।३।।

पजाब प्रान्त के पटियाला जनपद अन्तर्गत बनूड नामक नगर मे दीक्षा लेकर मुनि श्री आत्मा राम जी म० ने उसे भी सर्वत्र विख्यात बना दिया। आप जैसे महापुरुषो के विराजने से वह नगर स्वर्ग सा पवित्र क्षेत्र बन गया।

अध्यात्मज्ञान विज्ञाभि, सशुद्धा श्रमणा जना ।
धर्मलाभेन सन्तुष्टा, आपु शान्ति शुभप्रदाम्।।४।।

अध्यात्म के ज्ञान विज्ञान से शुद्ध हुए, अन्त करण वाले श्रमण लोग वहा बनूड नगर मे आकर, वहाँ के धर्म प्रचार के लाभ से सन्तुष्ट होकर अनुपम शान्ति और समभाव को प्राप्त करते थे।

शालिग्रामो मुनिर्मान्य, आत्माराम कुमारकम्।
दीक्षितञ्जैनधर्मे त, कर्तुमिच्छति सत्वरम्।।५।।

महामना श्रमण श्रेष्ठ, पूज्य श्री शालिग्राम जी म० शीघ्र ही वैरागी आत्माराम को दीक्षा देना चाहते हैं, जैन समाज इस पावन घोषणा को सुनकर अतीव प्रसन्न हुआ।

श्रुत्वेमा घोषणा पुण्या, तत्रत्या श्रमणा जना ।
प्रसेदु सर्वभावेन, दु खञ्जागतिकञ्जहु ।।६।।

इस पावन घोषणा को सुनकर वहाँ विराजित सभी मुनिजनसर्वभाव से प्रसन्न हुए और ससारिक दु खो को भूल गए।

स्रग्पुष्पजालै कदलीदलैश्च,
रसालपत्रै मृदुतोरणैश्च।
'बनूड' नाम्नो नगरस्य मार्गा,
अद्भि श्च गन्धै रुचिरा अभूवन्।।७।।

फूलो की मालाओ और कदली दलो, आम्र पत्रो तथा मृदु-तोरणो से, तथा सुगन्धित जल से 'बनूड' के राजमार्ग, सडके, गलिया आदि सभी सुगन्धमय हो उठी।

पुरस्य मार्गानभित समेता,
पौरा जना स्थानकवासिनश्च।
सपुष्पहस्ता कुसुमै सगन्धै,
रवाकिरन् तम्मृदुपौरकन्या ।।८।।

नगर के समस्त मार्ग नगर निवासी लोगो एव जैनियो से भरे हुए थे, वे लोग अपने हाथो मे सुगन्धित पुष्प लिए हुए थे और मार्ग मे वर्षाते हुए चल रहे थे।

शनै प्रगच्छन् जितमाररूप,
स आत्मरामस्त्वभिनन्द्यसत्व ।
जिनेन्द्रधर्मे नवदीक्षितो वै,
रराज मार्गेषु यथा जिनेन्द्र ।।९।।

कामविजेता, अभिनन्दनीय सत्व वाले, जिनेन्द्र धर्म मे नव दीक्षित मुनि श्री आत्माराम जी म० मार्ग मे जीवो की रक्षा करते हुए सयम पूर्वक जब जा रहे थे तो ऐसे सुन्दर लगते थे मानो साक्षात् जिनेन्द्र देव ही हो।

प्रदीक्षित स्थानकधर्म निष्ठ,
स वीतरागी धृतधौतवस्त्र ।
सारस्वत ज्ञानपय पिपासु,
कञ्चिद् गुरु ज्ञानदमिच्छति स्म।।१०।।

स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा मे दीक्षित, निर्मल श्वेत वस्त्रो से सज्जित, वीतरागी अर्थात् वीतराग देव द्वारा बताए हुए सयम पथ का पालक मुनि श्री आत्माराम जी म० सारस्वत ज्ञान धारा को पीने के इच्छुक थे, अत उन्हे किसी ज्ञानी, ज्ञान प्रदाता मुनि की गुरु रूप मे इच्छा थी।

७

"शिक्षा प्राप्ति प्रकरण"

मोतीराम सुरगुरुसम बुद्धिमन्त प्रविद्यम्,
विद्याराम गुणगणधर ज्ञान-विज्ञान-दक्षम्।
सत्याऽहिंसाव्रतनिधिधर सर्वविद्यानिधानम्,
आत्मारामो गुरुमुपगत श्रद्धयेद ह्यवोचत्।।१।।

सुरगुरु सम अर्थात् देव गुरु बृहस्पति के समान बुद्धिमान, प्रकृष्ट विद्वान, विविध विद्याओ मे निष्णात, अनके गुणो का समूह स्वरूप, ज्ञान विज्ञान मे दक्ष, सत्य और अहिंसा आदि पाँच महाव्रत रूप निधि के धारक, सभी विद्याओ के खजाने, पूज्य आचार्य श्री मोतीराम जी म० को पाकर मुनि श्री आत्माराम जी म० श्रद्धा पूर्वक इस प्रकार बोले।

विद्यावता ज्ञानवता वरेण्य!
विद्यानिधे! ज्ञाननिधे! कृपालो।
अज्ञान-पाथोधि-निमग्नशिष्यान्,
ज्योति प्रद! त्वा शिरसा नमामि।।२।।

विद्वानो एव ज्ञानियो द्वारा पूजित, हे विद्या निधे! कृपालु गुरुदेव! अज्ञान रूपी सागर मे डूबे हुए शिष्यो को ज्ञान ज्योति प्रदाता, मैं आपको मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।'

निरक्षरोऽह न हि वेद्मि किञ्चित्,
नेदम्मया कि करणीयमस्ति।
अज्ञोऽस्मि बालो नितरा निरीहो,
गुरो!-दयालो! भव मे गति स्त्वम्।।३।।

हे कृपालु गुरुवर! मैं निरक्षर हूँ, मुझे कुछ भी नहीं आता है। मुझे क्या करना है,

यह मैं नहीं जानता। मैं नितान्त निरीह और अनजान हूँ। आप मुझ पर कृपा करो, आपको छोड कर मेरी और अन्य कोई गति नहीं है।

विद्याश्च शास्त्राण्यधिगन्तुकामो,
जिज्ञासमानश्च गिराम्महत्वम्।
वागीश्वर ज्ञानघन प्रविद्यम्,
ज्योति प्रद त्वा शरण प्रपद्ये।।४।।

अध्यात्म विद्या और शास्त्रो को मै पढना चाहता हूँ। वीतराग वाणी के मर्म और महत्व को मैं जानना चाहता हूँ। हे वागीश्वर! ज्ञानी प्रवर, प्रकृष्ट विद्या वेत्ता ज्ञान ज्योति प्रदान करने वाले गुरुदेव, मै आपकी शरण में आया हूँ।

विदित्वा त स जिज्ञासु, जैनस्थानकवासिनम्।
विनीत खेदमापन्न, सस्नेह गुरुराह तम्।।५।।

उस नवदीक्षित मुनिवर पूज्य श्री आत्माराममजी म० की विनयशीलता, उत्कट जिज्ञासा और सेवा भावना को जानकर परम श्रद्धेय, आचार्य श्री मोती राम जी म० स्नेह के साथ उससे कहने लगे।

कथन्न मोदसे वत्स! किमर्थं नैव रज्यसे।
नदीतीर समासाद्याऽतृप्तो यासि कथ सुत।।६।।

हे वत्स! तुम मुदित और प्रसन्न क्यो नहीं होते? तुम नदी के किनारे पर आकर भी प्यासे क्यो हो?

जिज्ञासु प्रतिभापन्न, सत्याहिसापरायणम्।
सुशिष्यन्त्वादृशम्प्राप्य, सार्थकम्मम जीवनम्।।७।।

जिज्ञासु वृत्ति वाले, प्रतिभा सपन्न, सत्यवादी और अहिंसा परायण, तुम जैसे योग्य सुशिष्य को पाकर तो मेरा साधु जीवन सार्थक हो गया है।

मोतीरामो गुरुर्मान्य:, शास्त्रविद्याविशारद ।
धर्मविद्याश्च शास्त्राणि, भाषाश्च तमपाठयत् ।।८।।

शास्त्र विधाओ के पारगत, पूज्य प्रवर आचार्य श्री मोतीराम जी म० जैसे महान् ज्ञानी गुरुदेव ने पूज्य मुनिवर श्री आत्माराम जी म० को धर्म ग्रन्थ, अध्यात्म विद्या और भाषाएँ पढार्यी।

सस्कृत प्राकृत पालि, धर्म ग्रन्थाँश्च मौलिकान् ।
अधीत्य ज्ञान-सम्पन्न, स्तथा जातो यथा गुरु ।।९।।

सस्कृत, प्राकृत, पालि, हिन्दी आदि अनेक भाषाएँ एव विविध धर्मों के मौलिक ग्रन्थो को पढ कर और उनके गहन रहस्य को हृदयगम करके, मुनिवर पूज्य श्री आत्मा राम जी म० अपने गुरुदेव के समान विद्वान ज्ञानी हो गए।

अधीतशास्त्रश्च गृहीतविद्यो,
लब्धप्रतिष्ठो जिनधर्मनिष्ठ ।
स ब्रह्मनिष्ठो नितरा यविष्ठो,
धर्मस्य हेतोर्विचचार देशे ।।१०।।

शास्त्रो का अध्ययन करने के बाद, विविध विद्याओ को ग्रहण करके, जैन धर्म मे प्रगाढ श्रद्धा निष्ठा के बल पर पूज्य मुनि श्री आत्माराम जी म० ने समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त की और इस के बाद वह युवा मुनिवर धर्म प्रचार करने के लिए देश मे विचरने लगे।

८

महातपस्वी

यत्रापि कुत्रापि गतोबभूव,
तत्रैव तेजस्तु जगाम पूर्वम् ।
लोके रवेरागमनाद्धि पूर्व,
मायाति भूमौ विनितासुपुत्र ।।१।।

जहाँ कहीं भी पूज्य मुनि वर श्री आत्माराम जी म० अपने शिष्यो के साथ पधारते थे, वहीं पर उनका तेज प्रसारित हो जाता था। उनके पहुँचने से पूर्व ही उनकी महिमा आगे से आगे फैलती जाती थी। जैसे सूर्य के लोक मे उदय होने से पूर्व ही उसका का प्रकाश भूमि पर आ जाता है।

यथा यथा भानुरुदीयमान,
स्तेज स्वकीय प्रखर विधत्ते।
स आत्मारामोऽपि तथैव लोके,
जात प्रसिद्धो वयसा सम वै।।२।।

जैसे-जैसे उदीयमान सूर्य अपने तेज को निरन्तर प्रखर बनाता जाता है, वैसे ही पूज्यवर मुनि श्री आत्मारामजी म० भी लोक मे अपनी उम्र के बढने के साथ-साथ प्रसिद्धि पाते जाते थे।

महातपस्वी कृतपुण्यकर्मा
सद्धर्मशास्त्रेषु कृतप्रयत्न ।
विलोक्य लोके जिनधर्म दैन्यम्,
क्षुब्धम्मनो यस्य न तुष्टिमाप।।३।।

महातपस्वी, पुण्य कर्मों मे निरन्तर प्रवृत्त, सद्धर्म शास्त्रों के प्रचार प्रसार में प्रयत्नशील, लोक मे जैन धर्म की प्रसारता के अभाव को देखकर उनका क्षुब्ध मन कभी भी सन्तुष्ट नहीं होता था।

सघ सदोद्भावयिता मनस्वी,
प्रोत्थानशीलो जितलोभतृष्ण ।
गुरूँश्च सम्भावयिता मुनींश्च,
प्राबोधद्वै जिनधर्म निष्ठान्।।४।।

सघ की निरन्तर उन्नति चाहने वाले मनस्वी, प्रकृष्ट उत्थान के इच्छुक, सासारिक सुख की तृष्णा से रहित और लोभ विजेता, गुरु और मुनियो की सभावनाओं की पूर्ति हेतु उस मुनि प्रवर श्री आत्माराम जी म० ने जैनधर्म मे निष्ठावान लोगों को जागृत किया।

तारुण्यमाप्तो जितमारवाणो,
वज्राङ्गदेहोऽपिच सौम्यरूप ।
अध्यात्मनिष्ठो व्यवहारदक्षो,
लोकाँश्चरित्रैश्चकिताँश्चकार।।५।।

यौवन प्राप्त होने पर भी कामदेव के वाणो को जीतने वाले, वज्र समान सुदृढ़ देह होने पर भी सौम्यता धारण करने वाले, अध्यात्म निष्ठ और व्यवहार कुशल पूज्य श्री आत्माराम जी म० अपने उज्ज्वल चरित्र से लोगो को आश्चर्य चकित किया करते थे।

दयावतार करुणा-पयोधि,
क्षुद्रेऽपि जीवे नितरा दयालु ।
लोकेऽत्र धर्म परमो ह्यहिंसा,
लोकस्य लोकान् स मुनि शशास।।६।।

दया के अवतार, दया के सागर, छोटे-छोटे प्राणियों पर भी अत्यन्त दया भाव रखने वाले, उस मुनिप्रवर ने इस लोक में लोगों को अहिंसा परमो धर्म की शिक्षा दी।

उदारचेता प्रतिशोधशून्य.,
क्षमाधनो हर्षविषादहीन ।
मित्रे च शत्रौ समदृष्टिभावो,
गुरु गरीयान्गुरुता दधान ।।७।।

उदार चेता, प्रतिशोध की भावना से रहित, क्षमा को ही धन मानने वाले, हर्ष और विषाद से रहित, मित्र और शत्रु पर सम दृष्टि भाव रखने वाले, वे गुरुदेव मुनि श्री आत्माराम जी म० महती गुरुता को धारण करने वाले थे।

स ड्राक्तरोपधिधर सुवैद्यम्,
प्राणाज्जिहार्षुं यवनात्मज तम्।
'अल्लाह रक्षम्' विषद दयालुर्
मत्वा विमूढ क्षमते स्म सूरि ।।८।।

उस मुनिवर ने डाक्टर की उपाधि धारण करने वाले सुवैद्य, जो उनके प्राणो का ही हरण करना चाहता था, उस मुसलमान पुत्र अल्लाह रक्खा को भी जिसने उन्हे विष दे दिया था, उस पर दयालु दयानिधान गुरुवर ने उसे मूर्ख मानते हुए उसके इस जघन्य अपराध के लिए क्षमा कर दिया था।

दूरस्थदेशागतमानवञ्च,
तत्सद्मवृत्त निखिल रहस्यम्।
अनूद्य योगी निजयोगशक्त्या,
स्वदेशसस्थ कृतवान् विमुग्धम्।।९।।

दूर देश से आए हुए मानवो को उनके घरो का सारा वृतान्त और रहस्य अपने योग बल से जान कर उन्हे बता देते थे। पूज्य श्री मुनि आत्माराम जी म० अपने देश में रहते हुए उन्हें रहस्य बताकर विमुग्ध करते रहते थे।

योऽभीष्टधर्मस्य गुरोस्तनुजाम्,
स्वर्णाभवर्णां नवयौवनाप्ताम् ।
विशालनेत्रा सुदतीम्मनोज्ञाम्,
पीनस्तनीं पीन नितम्ब-देशाम् । ।१० । ।

ईसाई धर्म के गुरु अर्थात् पादरी ने अपनी नवयौवना रूपवती, सुन्दर लड़की, जो कि अतीव विशाल नेत्रो वाली अत्यन्त आकर्षक, विशाल वक्षस्थल और पुष्ट नितम्ब वाली थी।

विम्बाधरोष्ठीम्मृदुहास्यदक्षाम्,
श्यामा सुतन्वीं कृतकेशसज्जाम् ।
नाङ्गीचकार प्रभूरिन्द्रियाणाम्,
जितेन्द्रियोऽसौ न हि कस्य पूज्य । ।११ । ।

यह रक्त ओष्ठ वाली मृदुहास्य करने मे निपुण, षोडशो सुन्दर शरीर और सजाए हुए केशो वाली थी, जिसने अभी तक अपने स्वामी को चुनाव नहीं किया था, वह भी पूज्य मुनिवर के प्रति समर्पित थी। उस महामुनि के प्रति भला कौन समर्पित नहीं था? वे तो सभी के पूज्य थे।

स्व ब्रह्मरक्षोद्गततीव्रतेजा ,
सारस्वत ज्ञानमय रहस्यम् ।
सत्यार्जित शुभ्रतम यशश्च,
बभ्राम लोके से मुनिर्दधान । ।१२ । ।

अपने ब्रह्म की रक्षा से उत्पन्न तेज, सारस्वत ज्ञान के मर्मज्ञ, सत्य साधना से उपार्जित शुभ्रतम यश को वह मुनिवर धारण करते हुए लोक मे विराजित थे।

विद्यानदीष्ण पटुरात्मविज्ञो,
जैनागमाना प्रभुरप्रमेय ।
वाग्मी सहिष्णु परतर्कहन्ता,
बभूव सघस्य महोपकर्ता । ।१३ । ।

आत्म ज्ञान के विज्ञाता, जैनागमो के अप्रतिम ज्ञाता, प्रवचन कला प्रवीण, सुख दु ख मे अनुद्विग्न, अत्यन्त सहिष्णु, दूसरे के तर्कों को निरस्त करने वाले, वे महामुनि श्री आत्माराम जी सघ के महा-उपकारक थे।

जिज्ञासवो धर्मविदा वरिष्ठा,
महाशया शास्त्रविदो गरिष्ठा ।
शका समाधान परा महिष्ठा,
मुनीन्द्रराज तमुपागमन् वै ।।१४।।

धर्म तत्व वेताओ मे वरिष्ठ, महायशस्वी, स्वपर शास्त्र विज्ञाताओ मे श्रेष्ठ, जिज्ञासुओ की सन्तुष्टि और शकालुओ की शकाओ का समाधान करने मे परमनिष्णात उस मुनीन्द्र के पास ही लोग जाते थे।

लोकाना सशयच्छेत्ता, शकाऽज्ञानतमोहर ।
तमस्तोमहरो भानुरिवाऽभूत् स महामुनि ।।१५।।

लोगो के सशय को छिन्न भिन्न करने वाले, शका रूपी अज्ञान के अन्धकार के अपहर्ता महामुनि सूर्य के समान थे, अर्थात् जैसे सूर्य लोक मे फैले अन्धकार को दूर कर देता है, वैसे ही वे महामुनिवर लोगो के अन्त करण मे व्याप्त अज्ञानतम का निवारण कर देते थे।

९

उपाध्याय.

अव्यवस्थितसघाना व्यवस्थाङ् कृतवानसौ।
तेन साक सुधर्मिष्ठा धर्मोद्धाराय येतिरे।।१।।

अव्यवस्थित सघो को व्यवस्थित भी उसी मुनिवर ने किया। उनके साथ दूसरे वे धार्मिक लोग थे, जो धर्म का उद्धार करना चाहते थे। वे भी प्रयत्नशील हो गए थे।

हिसा विरक्ता करुणार्द्रचित्ता,
सभूय ते स्थानकवासिनो ये।
साहित्य विद्याऽऽगमधर्ममार्गे
ष्वग्रेसरा सन्ति न सशयोत्र।।२।।

जो भी स्थानकवासी जैन लोग थे, वे सभी हिंसा से विरक्त, करुणा से भरे चित्त वाले, साहित्य-लेखन एव पठन-पाठन और आगम-विघा तथा अन्यधर्म कियाओ मे अग्रसर हो गए थे।

परञ्चयत्तत्सुफल हि कस्य,
श्री आत्मरामो ननु नाम यस्य।
अद्याप्यसौ ज्ञानधनो महीयान्?
यश शरीरेण विराजतेत्र।।३।।

परन्तु यह सब किस के परिश्रम का सुफल था? यह उन्हीं महामुनि श्री आत्मा राम जी म० की कृपा का प्रसाद था। आज भी वे ज्ञानी गुरुदेव अपने महिमा मण्डित यश शरीर के रूप में विराजित हैं।

तत्ज्ञानविज्ञान फल प्रदातुम्,
स्वजीवनानि सफलानि कर्तुम् ।
आचार्यवृन्द श्रमणाश्च सिद्धा,
व्यचारयन्ते समुद समेत्य ।।४ ।।

उसके ज्ञान विज्ञान और सयम साधना को पुरस्कृत करने के लिए एव अपने साधु जीवन को सफल बनाने के लिए श्रमण सघ, आचार्य और प्रसिद्ध-२ लोग एकत्रित होकर विचार करने लगे।

येषाम्महापूतचरित्रभाजाम्,
यशोऽद्य लोकाँस्तु पुनाति नित्यम् ।
तेषाम्मुनीना प्रथम प्रसिद्धो
भजेदुपाध्याय पद नु कश्चित् ।।५ ।।

जिन महापुरुषो का पावन-चरित्र आज भी नित्य लोगो के चरित्र को पावन करने मे समर्थ है। उन मुनिवरो मे कौन प्रसिद्ध उपाध्याय पद को ग्रहण करे

भक्ति शास्त्र निधि बह्म, युते विक्रम वत्सरे।
फाल्गुनशुक्ल षष्ठ्यासी, त्तिथि पुण्यतमा शुभा ।।६ ।।

विक्रम सवत् १९६९ की फाल्गुन महीने का शुक्ल पक्ष चल रहा था, उसकी छठी शुभ तिथि थी।

'अमृत सर' इत्याख्ये, प्रसिद्धे नगरे तदा।
आचार्या सर्वसघाना, समेत्य मोदमावहन् ।।७ ।।

विद्वद्वरेण्यैर्जिनधर्मवृद्धै,
राचारवद्भिर्जिनधर्मपूज्यै ।
आचार्य वृन्दैश्च महामुनीन्द्रै,
स आत्मारामो ह्यभिनन्दितोऽभूत् ।।८ ।।

अमृतसर नामक प्रसिद्ध नगर मे, तब सभी संघों के प्रमुख व्यक्तियो एव आचार्य श्री सोहन लाल जी म० ने प्रसन्नता का अनुभव किया और वहा उपस्थित समस्त मुनि-वृन्द, आचार्य श्री जी म० तथा लब्ध- प्रतिष्ठित विद्वान व्यक्तियो ने परम श्रद्धेय मुनि श्री आत्मा राम जी को उपाध्याय पद पर अभिषिक्त कर उनको अभिनन्दित किया।

विदुषा धर्मवृद्धाना, सन्निधौ च महात्मनाम्।
उपाध्यायपद तस्मै, प्रदत्तम्मुनिपुगवे ।।९।।

विद्वान व्यक्तियो, वृद्धो, जिन धर्मानुयायियो तथा महामुनियों के सान्निध्य मे उस मुनि पुगव पूज्य श्री आत्माराम जी म० को उपध्यायपद पर प्रतिष्ठित किया गया।

उपाध्यायपद प्राप्य, नम्रान्नम्रतरोऽभवत्।
प्रतिष्ठा प्राप्य विद्वान्सो, नमन्ति नैव तूद्धता ।।१०।।

उपाध्याय पद को प्राप्त करके पूज्य श्री आत्माराम जी म० और भी अधिक विनयशील हो गए, क्योकि विद्वान् पुरुष प्रतिष्ठा को प्राप्त करके विनम्र हो जाते है किन्तु उद्धत पुरुष नहीं।

फलैर्वृक्षा जलैर्मेघा , सद्गुणै साधु सज्जना ।
नमन्त सत्व सम्पन्ना, भजन्ते गुरुगौरवम्।।११।।

फलो से वृक्ष, जल से बादल और सद्गुणो से शक्ति सपन्न साधु सज्जन पुरुष नम्र होते हुए महान् गुरु गौरव को प्राप्त करते हैं।

उपाध्यायपद तत्तु, जात तेन विभूषितम्।
न तु तेन पदेनाऽसावात्मारामो ह्यलङ्कृत ।।१२।।

उपाध्याय पद मुनि श्री आत्माराम जी म० को पाकर सुशोभित हो उठा, उस पद से मुनि श्री की उतनी शोभा वृद्धि नहीं हुई।

परस्पर सघगत विरोध,
मध्वसयद् बुद्धि बलेन सूरि ।
सघम्पुनश्शक्तिमय विधातुम्,
यत्नाननेकान् विदधे मुनीन्द्र ।।१३।

सघ मे व्याप्त परस्पर के वाद विवाद एव कलेशो को दूर करने मे मुनि प्रवर श्री उपाध्याय आत्मा राम जी म० ने अपने बुद्धि बल और कौशल का अपूर्व परिचय दिया, उनके आशीर्वाद से सघ की शक्ति फिर बढने लगी।

अपास्तशको नृशम विधत्सु,
शिष्यैरनेकैरुपसेव्यमान ।
अध्यात्मविद्यागुरुतत्त्वनम्रो,
लोके गरीयान् यशसा बभूव।।१४।।

अपने शिष्यो प्रशिष्यो द्वारा उपसेवित उस महान साधक पूज्य उपाध्याय श्री आत्मा राम जी म० ने लोगो की शकाओ का निवारण करके शन्ति की स्थापना की। इस प्रकार अनेक समस्याओ के निवारण तथा अध्यात्मविद्या के महान तत्व ज्ञान से विनम्र बन कर उन्होने लोक मे महान् प्रतिष्ठा प्राप्त की।

१०
मनस्विता

वैजन्य-सेवी जगत प्रकाशे,
ह्यकिञ्चनश्चापि महागुणाढ्य ।
उदग्रतेजा जितसर्वशत्रु,
मृदुस्वभावेन बभूव मान्य ।।१।।

एकान्त प्रिय जगत के प्रकाशक, अकिंचन होते हुए भी महान गुणो के पुज अपने उदग्र तेज से सर्व शत्रुओ को जीतकर वे महामुनि उपध्याय श्री आत्माराम जी म० अपने मृदु स्वभाव के कारण सब के पूज्य बन गए।

एकदा पण्डित श्रेष्ठो, 'नेहरु' नाम विश्रुत ।
देश भक्तेषु मूर्धन्यो, ददर्श मुनिपुगवम् ।।२।।

उनकी लोक विश्रुत महिमा से प्रभावित होकर मूर्धन्य देश भक्त और भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी भी पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री आत्मा राम जी म० के श्री चरणो मे उनके मगल दर्शन करने एव आशीर्वाद लेने आए थे।

विनीतम्प्रणमन्त त, मातृभूमेरुपासकम् ।
'जवाहर' इतिप्रख्य, सिषेचे मुनिराशिषा ।।३।।

विनीत और प्रतिज्ञा परायण, मातृभूमि के उपासक, लोक प्रसिद्ध पडित जवाहर लाल जी को, पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने अपने आशीर्वाद से तृप्त किया।

मोतीलाल सुत श्रेष्ठ, जवाहराख्यमेवतु ।
ऊचे स्वतत्रता भाव, स रहस्यम्मुनीश्वर ।।४।।

श्री मोती लाल नेहरू के उत्तम पुत्र पडित जवाहर लाल नेहरु को पूज्य श्री आत्माराम जी म० ने स्वतन्त्रता के भावात्मक रहस्य का उपदेश दिया।

जगादाऽसौ महायोगी, सूरि ज्ञानवता नर ।
कर्तव्य कि स्वदेशाय, यद् वदामि श्रणोतु तत्।।५।।

पूज्य प्रवर महायोगी, धर्माचार्य, परम श्रद्धेय श्री आत्मा राम जी म० ने पडित जवाहर लाल जी को सम्बोधित करते हुए कहा कि बुद्धिमान पुरुषो को अपने देश के लिए क्या करना चाहिए वह मै तुम्हे बताता हूँ, आप इसे ध्यान से सुने।

स्वातन्त्र्यप्राप्तुकामो ना चिन्तयेत्प्रथमत्विदम्।
पराधीनोऽस्मि लोकेऽह, कथञ्चाऽस्मिपराश्रित ।।६।।

जो स्वतन्त्रता चाहता है उसे सर्वप्रथम यह सोचना चाहिए कि मै इस लोक मे पराधीन हूँ , इसका क्या कारण है? मै पराश्रित क्यो हुआ हूँ ?

उपायै कैश्च मे मुक्ति, र्बन्धात् सम्भविष्यति।
यथाशक्ति तत शीघ्रम्मुक्तियत्नान् समाचरेत्।।७।।

इन बन्धनो से मुक्ति के लिए क्या-क्या उपाय करने होगे? ऐसा विचार करके फिर अपनी शक्ति के अनुसार प्रयत्न करने चाहिए।

तस्मिन्नेव प्रसगेऽ सौ, जैनशासनपण्डित ।
आत्मारामो मुनिर्मन्यो, जगाद राष्ट्रनायकम्।।८।।

इस प्रसग मे जैन शासन पडित पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने धर्मानुसार जीवन जीने एव लोगो मे धार्मिक चेतना जगा कर ही स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकती है। उस राष्ट्र नायक को ऐसा उपदेश दिया।

श्रणु तावन्महाभाग, यत्किञ्चित्प्रवदामि ते।
तीर्थंकरेण यत्प्रोक्तञ्जन-कल्याणकाक्षिणा।।९।।

पूज्य श्री आत्माराम जी म० ने कहा - हे महाभाग ! लोक हित चाहने वाले तीर्थंकर भगवान महावीर ने जो स्वतन्त्रता प्राप्ति का मार्ग बताया है, वही मैं तुमको सुनाऊँगा।

प्रोक्तास्तेनाष्ट सन्देशा सर्वथा शान्तिदायका ।
तेषु तिष्ठन्ति सौख्यानि, बाह्याभ्यन्तराणि च। ।१०। ।

पूज्य श्री आत्माराम जी म० ने आठ सन्देश दिए, जो सदैव सुख शाति दायक थे उन्हीं मे बाह्य और आभ्यन्तर सुख छिपे हुए हैं।

ज्योति स्तम्भसमा लोकान् दर्शयन्ति महापथम्।
दृष्टमार्गा भवाब्धिन्ते, पार यान्ति गतव्यथा । ।११। ।

वे आठ सन्देश ज्योति स्तम्भ के समान हैं जो लोगो को रास्ता दिखाते हैं। सही मार्ग को जान कर वे पुरुष ससार सागर को बिना व्यथा के पार कर जाते हैं।

धीमना तेन ये प्रोक्ता, सन्देशा अष्टसख्यका
क्रमशस्तान् विजानीया, ज्ञात्वा शान्तिमवाप्स्यसि। ।१२। ।

उन ज्ञानी गुरुदेव पूज्य श्री आत्माराम जी म० ने वे जो आठ सन्देश दिए है जिन्हे जान कर शान्ति को प्राप्त करोगे उन्हे क्रमश जानो।

११
सन्देशा

श्रुतन्न यच्छास्त्रगत रहस्यम्
सर्वन्त्वया तच्छ्रवणीयममस्ति।
श्रुत विना त्व न हि गूढतत्वम्,
ज्ञातु समर्थोऽसि शतप्रयत्नै ।।१।।

तुमने अभी तक जो शास्त्र गत रहस्य नहीं सुने है वे सभी तुम्हे सुनने चाहिए, क्यो कि सुने बिना उन गूढ तात्त्विक रहस्यो को सैकडो प्रयत्न करके भी नहीं जान सकते।

श्रुतु तथा धारय तद् विशुद्धम्,
श्रेयस्कर यद् भवमुक्तिहेतु।
नि सारतत्व त्वपसार्य दूरम्
सार यथा धारयतीह शूर्प ।।२।।

विशुद्ध शास्त्र को, जो ससार से मुक्ति दिलाने मे सहायक है धारण करना चाहिए। निस्सार तत्त्व को छाज की भाति छोडकर सार तत्त्व को ग्रहण करना चाहिए।

ज्ञानी मुमुक्षुर्निज मुक्तिहेतो
कर्माणि सर्वाणि च नूतनानि।
बलाद् विरुध्य प्रतिकर्तुकाम,
स्वजीवन शान्तिमय विद्ध्यात्।।३।।

ज्ञानी, मुमुक्षु महानुभावो को अपनी मुक्ति के लिए नये कर्मों के आगमन को शक्ति से रोकर अपने जीवन को शान्ति मय बनाना चाहिए।

कृतन्त्वया यन्निजपूर्वकाले,
तस्यविनाश करणीय एव।
विना विनाश कृतकर्मणा नु,
ससारबन्धान्न विमुक्तिरस्ति। ।४। ।

तुमने जो कर्म पूर्व जन्म मे किए है उन्हे तुम्हे नष्ट करना ही होगा। पूर्वकृत कर्मों के विनाश किए बिना ससार के बन्धनो से मुक्ति नहीं होती।

ये सन्त्यनाथा श्च निराश्रयाश्च,
महन्ति कष्टानि सदा सहन्ते।
दु खान्यसह्यान्यपसार्य दूरम्,
तेषाड् गातिस्त्व भवदु खहारी। ।५। ।

जो अनाथ और निराश्रय है जो कि महान् कष्टो को सहन करते हैं उनके उन भयकर कष्टो को दूर करके उनके लिए तुम दु ख हर्ता बनो।

अशिक्षिता ये च विहीनशिक्षा,
विद्याविहीना पशुवच्चरन्ति।
विद्याप्रदानेन तु शोधनीया,
नेत्र तृतीय कथिता सुविद्या। ।६। ।

जो अशिक्षित और विद्या विहीन लोग हैं वे ही पशुओ की भाति आचरण करते है जीवन जीते है, उनको विद्या प्रदान करके उनके लिए सुखकारी बनो, विद्या को महापुरुषो ने तृतीय नेत्र कहा है।

ये सन्ति लोके सरुजो मनुष्यास्,
ते सेवनीया सतत, समृद्धै।
अध्यात्ममूला मुनिभि प्रबुद्धै
प्रकीर्तिता वै असहायसेवा। ।७। ।

इस ससार मे जो रोगी मनुष्य हैं, स्वस्थ समृद्ध व्यक्तियो को उनकी निरन्तर सेवा करनी चाहिए। अध्यात्म साधना के प्रबुद्ध पुरुषो एव प्रबुद्ध मुनियो ने सेवा को उत्तम परम धर्म कहा है।

निष्पक्ष भावेन नरो मुमुक्षु,
क्लेशान्महादोषकरान् हिपञ्च।
समूलमुत्पाट्य मनोगर्तांस्तान्
वपेन्नृलोके सुखशान्तिबीजम्।।८।।

मुमुक्षु महापुरुषो को निष्पक्ष भाव से महादोषो के उत्पादक पाच क्लेशो को लोगो के मनो से समूल उखाड कर सुख शाति के बीज बोने चाहिए।

अज्ञानमस्मितारागो, द्वेष आलस्यमेव च।
पञ्चक्लेशास्तु विज्ञेया दु खदा शान्तिघातका।।८।।

अज्ञान, अभिमान, राग, द्वेष और आलस्य ये पाचो ही क्लेश हैं, जो दु ख देने वाले और शान्ति के नाशक हैं।

१२
आचार्यत्वम्

वायु शून्य नभोनेत्र युते सम्वत्सरे शुभे।
चैत्र शुक्लत्रयोदश्याम्मुहूर्ते पावने शुभे।।१।।

वि० सवत् दो हजार पाच के शुभ मास चैत्र शुक्ल त्रयोदशी मे शुभ मुहूर्त था जिस समय पूज्यवर उपाध्याय श्री आत्माराम जी म० को श्रेष्ठ पद प्रदान किया गया।

'लुधियाने' ति विख्याते, प्रसिद्धे नगरोत्तमे।
श्रमणैश्श्रमणाचार्यैरात्मारामोऽभिनन्दित ।।२।।

लुधियाना नगर जो कि पजाब का ही नहीं, अपितु भारत वर्ष का ही प्रसिद्ध नगर है अपने औद्योगिक निर्माण के लिए विश्व भर मे विख्यात है। इसी नगर मे जैन श्रमण-श्रमणियो एव धर्माचार्य आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने पूज्य श्री आत्माराम जी म० को अभिनन्दित किया।

चतुर्विधेन सघेन, प्रार्थितो गुणभूषित ।
आचार्यपदवीं श्रेष्ठा दधार प्रश्रयान्वित ।।३।।

चतुर्विध सघ ने एकत्र होकर विभिन्न गुणो से विभूषित पूज्य श्री आत्माराम जी से आचार्य पद ग्रहण करने की प्रार्थना की कि हे पूज्य आप आचार्य पद स्वीकार करके हमे धर्मावलम्बन दे।

उदीयमानो ह्युदयाचलस्थो,
जनैर्यथा भानुरुपास्यते वै।
तथा स आचार्य पदाधिरुढो,
जिनेन्द्रभक्तैरभिनन्दितोऽभूत्।।४।।

उदयाचल से उदय होते हुए सूर्य को जैसे लोग पूजते हैं, वैसे ही आचार्यपद पर प्रतिष्ठित परम पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी म० जिनेन्द्र देव के भक्तो द्वारा अभिनन्दित हुए।

चन्द्रो हि तारागण-मध्यसस्थ,
शोभामनन्ता भजते यथैव।
तथा मुनीन्द्रो जिनधर्म-निष्ठो,
रराज योगी गुरुता दधान ।।५।।

जिस प्रकार रात्री मे तारा गण के मध्य परिपूर्ण चन्द्रमा धवल ज्योत्स्ना से अनन्त शोभा को धारण करता है। वैसे ही पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी महाराजमुनि सघ के मध्य मे अपनी अपूर्व धर्म निष्ठा एव योग साधनालब्ध गुरुता को धारण करके सुशोभित हो रहे थे।

दयाक्षमात्यागविरागधैर्य,
मैत्रीप्रशान्त्यादि गुणै र्विशिष्ट ।
आचार्यपीठे शुशुभे यदाऽसौ,
तदा स पौरै र्जयतीत्यभाषि।।६।।

दया, क्षमा, त्याग, विराग, धैर्य और प्रशान्ति आदि अपने विशिष्ट गुणो के कारण विशिष्टतया पूज्य प्रवर श्री आत्माराम जी म० ने जब आचार्य के आसन को सुशोभित किया तब नगर निवासी भक्त जनो ने उनकी जय जयकार से वातावरण को गुजायमान कर दिया।

आचार्यबर्गेषु महाविशिष्ट,
गुणैर्महद्भिस्तपसा वरिष्ठ ।
महीयसा मानवता महिष्ठ.,
उपस्थितांस्तानगदद् गरिष्ठः।।७।।

आचार्य वर्ग मे महान विशिष्ट, अपने महानगुणो एव अपनी अनुपम स्वाध्याय तपस्या मे वरिष्ठ, अपने मानवीय गुणो से मानवता के अग्रदूत पूज्य श्री आत्माराम जी म० ने वहाँ उपस्थित लोगो से कहा था।

धन्यास्तिनून नगरस्य भूमि,
यूयञ्च सर्वे ननु धन्यभाज ।
धन्या वय धन्यतमोऽस्ति धर्म,
जिनावतार मुनिराजमाप्त्वा ।।८।।

निश्चय ही इस नगर की भूमि धन्य है और तुम सब भी धन्यवाद के पात्र हो। हम सब भी धन्य है और जैन धर्म भी धन्य है जो जिनेश्वर देव के अवतार स्वरूप आचार्य श्री आत्माराम मुनिराज जी म० हमे प्राप्त हुए हैं।

पुनर्मुनीन्द्रञ्जनामध्यसस्थम्,
आचार्यपीठासनसन्निविष्टम् ।
तमात्मरामञ्जितमोहतृष्णम्,
जगाद चेत्थ मुनिराज एक ।।९।।

वहाँ उपस्थित मुनियो के समूह मे से एक मुनिवर उठे और आचार्य पद पर विराजित परम पूज्य आचार्य श्री आत्माराम जी म० जो मोह और तृष्णा के विजेता थे, उनसे कहने लगे।

विद्याविदात्मरामत्व, यत्पद स्वीकरिष्यसि ।
तत्पद त्वत्प्रसादेन, नून गौरवमाप्स्यति ।।१०।।

हे विद्वद्‌र पूज्य श्री आत्मा राम जी म० आप जिस पद को स्वीकार करोगे, वह पद अवश्य ही आपके पराक्रममयी कृपा प्रसाद से गौरव को प्राप्त करेगा।

यो भास्वरो जागतिक प्रपञ्चो,
नाऽनश्वरोऽसौक्षणभङ्गुरश्च।
मूढोजन कामयते तमेव,
नाध्यात्मवेत्ता न च वीततृष्ण ।।११।।

ससार का जो चमक दमक वाला प्रपञ्च दिखाई दे रहा है वह अनश्वर ही नहीं क्षण भगुर भी है, परन्तु मूर्ख व्यक्ति ही उनकी कामना करता है, आत्म ज्ञानी और त्यागी नहीं।

आचारवन्त सुजना सुवृत्ता,
आचार्यपीठ खलु मण्डयन्ति।
आचारहीनो न पुमान्कदापि,
महन्महत्त्व लभते प्रशस्यम्।।१२।।

सुव्रतो का पालन कर्ता, आचारनिष्ठ सज्जनपुरुष, आचार्य के आसन को ग्रहण करके, उसे सुशोभित करते है। आचारहीन पुरुष ऐसा कभी भी नहीं कर सकता। महापुरुष ही महत्वपूर्ण प्रशसनीयपद को प्राप्त करता है।

यो मुक्तसगो गतमत्सरश्च,
प्रमादशून्यश्छलदम्भहीन ।
आचारशुद्धो मनसा पवित्र,
आचार्यपीठ श्रयितु स शक्त ।।१३।।

सासारिक सयोगो से मुक्त, ईर्ष्याभाव से रहित और अप्रमत्त, छलकपट से रहित, शुद्ध आचारवान, पवित्र मनवाला महापुरुष ही आचार्य पद को पाने मे समर्थ होता है।

न केवल शिक्षयते स्व शिष्यान्,
शास्त्राणि विद्या विविधागमाँश्च।
आचारशिक्षामपि चात्मविद्याम्,
यत्नै सदा ग्राहयतीह सूरि ।।१४।।

आचार्य न केवल अपने शिष्यो को ही शास्त्रीय विद्या और विविध आगमो का ज्ञान प्रदान करते हैं, परन्तु सच्चे सूरिजन आचार शिक्षा और अध्यात्म विद्या का दान समस्त सघ को प्रयत्नपूर्वक देते थे।

धीर सहिष्णु करुणार्द्रचेता,
जितेन्द्रियस्त्यागपरस्तपस्वी।
लोके सदा श्रेष्ठतम पवित्र
माचार्यपीठ श्रयते ह्यशक ।।१५।।

धैर्यवान परिषहो को सहन करने मे कुशल करुणा से परिपूर्ण हृदय वाले इन्द्रियो के विषयो को जीतने वाले, त्याग निष्ठ और स्वाध्यायादि तपो मे सलग्न रहने वाले श्रेष्ठ और पवित्र मना साधक ही ससार मे आचार्य पद को प्राप्त करते हैं, वे सब शकाओ से रहित होते हैं।

आचार्यपीठात् स मुनि महात्मा,
ह्युपस्थितॉस्तान् समबोधयत्यत्।
सर्वेषु धर्मेषु महन्महत्त्व
माचारविभ्दि बहुवर्णित तत्।।१६।।

आचार्य पद स्वीकार करके पूज्यवर श्री आत्मा राम जी म० ने वहॉ उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी धर्मों के आचार्यों ने आचरण को अत्यधिक महत्त्व दिया है और कहा है कि-

सुसज्जित सर्वविधैर्मनोज्ञ,
सौवर्णिकश्चापि घटो विशुद्ध ।
जलैर्विहीनो न कदाप्यसह्याम्,
तृष पिपासो शमितु समर्थ ।।१७।।

अच्छी प्रकार से सजाया हुआ, सब भाति से मनोहर और विशुद्ध स्वर्ण से बना घडा भी जो जल से रहित है वह कभी भी प्यासे व्यक्ति की प्यास को शात नहीं कर सकता।

रिक्तो तथा हैमघटो महार्घ
शब्दायते नूनमवाप्य घातम्,
आचारहीनो मनुजोऽ कुलीनो,
नि सार वाक्यानि तथा ब्रवीति।।१८।।

जैसे महामूल्यवान सोने का खाली घडा चोट लगने पर केवल शब्द करता है, वैसे ही आचारहीन अकुलीन पुरुष भी केवल निरर्थक वाक्य बोलता है, उसकी बातो का कोई मूल्य नहीं होता।

ज्ञानी सुविद्वानुपदेशकर्ता,
वाग्मी सुसभ्यो मितवाङ् मनुष्य ।
आचारहीन स भवेद्धि चेत्तु,
तस्योपदेशा ननु सारहीना ।।१९।।

उत्तम विद्वान ज्ञान भरा उपदेश देने वाला, वाग्मी, सुसभ्य और अल्पभाषी मनुष्य भी यदि आचरण स हीन है तो उसके उपदेश भी सारहीन होते हैं।

विस्मृत्य सर्वञ्जगत प्रयञ्च,
माचारमेक परमम्पवित्रम्।
श्रेष्ठञ्च शुद्ध नितरा प्रकृष्टम्,
विधातुकामो विचरेन्मुमुक्षु ।।२०।।

इसलिए ससार के सभी प्रपचो को छोड कर परम पवित्र, शुद्ध श्रेष्ठ और नितान्त उज्ज्वल एक मात्र चरित्र को धारण करके मुमुक्षु साधको को जीवन यापन करना चाहिए।

१३
प्रयास-फलम्

आचारवन्त स्वत एव पूता,
अन्याञ्जनान् चापितु पावयन्ति।
आचरहीन कृतकण्ठशास्त्रम्,
न वाग्मिनञ्चापि पुनन्ति वेदा ।।१।।

पवित्र चरित्रवान महापुरुष स्वय तो पवित्र होते ही हैं, अपितु वे दूसरे पथ भ्रष्ट लोगो के जीवन को भी पवित्र बना देते हैं। शास्त्रो को कण्ठस्थ करने वाले प्रवचन कुशल किन्तु आचरणहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र करने मे समर्थ नहीं होते।

'आचार परमोधर्म''अग सूत्रेषु' वर्णित ।
'आचारागस्तु तस्माद्धि प्रथमस्तत्र कीर्तित ।।२।।

अग सूत्रो मे वर्णन मिलता है कि आचार ही परम धर्म है, इसलिए आगम सूत्रो मे आचार प्रधान आचाराग सूत्र को प्रथम स्थान मिला है।

आचार्यो जैनधर्मे तु, कीर्तित सर्वतो महान्।
तस्याचारविशुद्धित्वात्, नैव शासनकारणात्।।३।।

जैन धर्म मे आचार्य को सबसे महान महत्व पूर्ण कहा गया है इसका कारण उसका सघ पर शासन करना नहीं अपितु उनकी आचरण विशुद्धि ही के कारण उनका सर्वोच्च स्थान है।

तीर्थकराधिष्ठितजैनधर्मे,
सद्‌वृत्तवर्गे प्रमुखा हिपञ्च।

आचार्य आचारचय पवित्रम्,
ब्रूते स्वशिष्यान् सुपथच्युतॉंस्तान् ।।४।।

तीर्थ की स्थापना करने वाले तीर्थंकरो से अधिष्ठित जैन धर्म मे सद्वृत्ति वर्ग मे ये पाच प्रमुख हैं। अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु। आचार्य आचार धर्म का प्रमुख पवित्र पुञ्ज होता है। आचार्य श्री अपने शिष्यो को आचार की शिक्षा देकर धर्म मे स्थिर करते हैं।

ज्ञानस्याचरण ह्याद्य द्वितीय दर्शनस्य च।
चरित्राचरणञ्चान्यच्चतुर्थन्तापस तथा।।५।।
पञ्चमवीरतापूर्णम् प्रोक्तमाचरण शुभम्।
पञ्चैते तु सदाचारा पालनीया मुमुक्षुभि ।।६।।

पाच प्रकार का आचार होता है उनमे प्रथम ज्ञानाचार, दूसरा दर्शनाचार, चरित्राचार, तपाचार और वीर्याचार शुभ बताए हैं। मोक्ष चाहने वाले साधको को अवश्य ही इनका पालन करना चाहिए।

आचार्य आत्मरामोऽसौ, सर्वसघ शिरोमणि ।
प्रयेते सघमाबद्धुमेकसूत्रे विश्रखलम्।।७।।

आचार्य प्रवर पूज्य श्री आत्माराम जी म० के जीवन मे वह सभी गुण विघमान थे इसीलिए वे समस्त सघो के शिरोमणि थे। इसीलिए उन्होने बिखरे हुए सघ को प्रयत्न करके एक सूत्र मे बाधे रखा।

मुनीन्द्रस्यात्मरामस्य, वैदुष्यमद्भुतखरम्।
शास्त्रेषु बुद्धि नैपुण्य, वाणीचातुर्यमेव च।।८।।

इन मुनीन्द्र पूज्य आचार्य श्री आत्मा राम जी म० का वैदुष्य अद्भूत और अनुपम था। शास्त्रो मे उनकी गहरी पैठ, उनका बुद्धि कौशल और वाणी चातुर्य सब कुछ अद्वितीय था।

ज्ञान सारस्वतम्भूत तैक्ष्ण्य तस्य तेजसि।
बुद्धि विवेक सम्पन्ना, शक्ति सघटनात्मिकाम्।।९।।

उनकी तेजस्वी साधना मे ज्ञान सारस्वत हो गया था। उनकी बुद्धि, विवेक सपन्नता और उनका आध्यात्मिक शक्ति का सयोजन अपूर्व था।

अदम्योत्साहभावञ्च, व्यक्तित्वञ्च महोज्ज्वलम्।
विभाव्य सर्वसघाना, सदस्या मोदमावहन्।।१०।।

उनके अदम्य उत्साह भाव और महा-उज्ज्वल व्यक्तित्व को देखकर सभी सघो के सदस्य प्रसन्नता का अनुभव करते थे।

ते मोदमाना श्रमणा समेत्य,
विचारयामासुरिद रहस्यम्।
'प्राचार्यपीठो ननु रिक्तमेव एव',
पूर्ति र्भवेदस्य तु तूर्ण मेव।।११।।

उन प्रसन्न हुए श्रावक तथा श्रमणो ने एकत्र होकर रहस्य की वार्ता पर विचार किया। प्रधान आचार्य का पद रिक्त है। अत इसकी शीघ्र ही पूर्ति होनी चाहिए।

'मारवाड' इतिख्याते, प्रदेशे धर्मपालिते।
'सादडी' नाम विख्याता, पुर्यासीद् तत्रविश्रुता।।१२।।

धर्म से अनुरजित भारत वर्ष मे प्रसिद्ध मारवाड (राजस्थान) प्रान्त के सादड़ी नाम की, धर्म की ध्वजा के समान उत्तम नगरी थी।

तस्यामेव नगर्यान्तु, धर्मनिष्ठा मुनीश्वरा।
धर्मसघसदस्याश्च समेत्येद व्यचारयन्।।१३।।

उसी नगरी मे धर्मनिष्ठ श्रावकों एव वरिष्ठ मुनिवरो न मिलकर एक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमे सारे भारत के प्रान्तो के प्रतिनिधि आए, उन सब ने मिल कर विचार विमर्श किया।

निध्याकाशनभश्चक्षु सयुते शुभ वत्सरे।
वैशाख शुक्लापक्षीया, तृतीयाऽऽ सीच्छुभा तिथि ।।४।।

शुभ सवत् दो हजार एक सौ उन्नसी चैत्र शुक्ल की पवित्र तृतीया थी। उसी तिथि मे आचार्य श्री आत्माराम जी म० को आचार्य सम्राट् पद प्रदान किया गया।

प्रधानाचार्यरूपेण ह्यात्मारामो महामुनि ।
भव्ये महोत्सवे तत्र, वृत्त सर्वै र्महाजनै ।।१५।।

वहाँ पर अखिल भारतीय वर्धमान श्रमण सघ का गठन हुआ जिसमे साधु साध्वियो के साथ-साथ प्रमुख-प्रमुख श्रावक और श्राविकाए भी सम्मिलित थीं। एक ऐतिहासिक महोत्सव वहाँ सपन्न हो रहा था, जिसमे पूज्य श्री आत्माराम जी म० को सभी ने एक मत से श्रमण सघ का प्रथम आचार्य सम्राट् बनाया।

प्रधानाचार्य पीठस्थ, आत्मारामो विदावर ।
ज्ञानवृद्धो वयोवृद्धो रराज मृगराजवत् ।।६।।

विद्वद् पूज्य श्री आत्माराम जी म० अपने अनुपम ज्ञान की वरिष्ठता तथा अपने अनुभवो से परिपूर्ण वृद्धावस्था के कारण प्रधान आचार्य के पद पर प्रतिष्ठित होकर शेर के समान सुशोभित हो रहे थे।

१४
व्यक्तित्वम्

महत्त्वपूर्ण सुपद तदाप्त्वा,
नम्रोऽप्यसौनम्रतरोवभूव।
भवन्ति वृक्षा जलदाश्च नम्रा,
फलोद्गमै वारिचयै प्रभूतै ।।१।।

उस महत्त्व पूर्ण पद को प्राप्त करके परम पूज्य श्री आत्माराम जी म० अत्यन्त विनम्र हो गए। जैसे फलो के आने से वृक्ष और जल से परिपूर्ण होने पर बादल निरन्तर नीचे झुके-झुके रहते हैं।

धर्मध्वजो धर्मविचारदक्ष ।
शिष्यै प्रबुद्धैरनुगम्यमान ।
सद्वृत्तपूतो निजधर्म हेतो.,
देशे पदात्येव चचार सभ्य ।।२।।

धर्म की ध्वजा के समान उज्ज्वल, धर्म प्रभावना मे निपुण, प्रबुद्ध शिष्यों से सेवित,अपनी प्रवृत्ति की सात्त्विकता से पवित्र हुए परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी म० ने देश मे जिन धर्म की प्रभावना के लिए पैदल ही भ्रमण किया।

यत्रापि कुत्रापि गतोऽभवत् स,
जगाम तत्रैव तु शिष्य वर्ग ।
सद्धर्मभाव जन मानसेषु,
प्रोद्भावयन् वैविचचार भूमौ।।३।।

जहाँ कहीं भी परम पूज्य आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी म० गए, वहीं उनके शिष्यों ने धर्म प्रचार के लिए धर्म यात्राएँ कीं जन मानस मे सद्धर्म की प्रभावना के लिए उन्होने भारत भूमि पर विचरण किया।

ग्रन्था अनेके विनिगूढतत्वा,
अनूदितास्तेन महाशयेन।
सारस्वत ज्ञानधन विशुद्धम्,
प्रख्यापयन्ति प्रथुल हि तस्य।।४।।

उन महायशस्वी आचार्य देव ने अनेक अतीव गूढ ग्रन्थो का अनुवाद भी किया। वे ग्रन्थ उनके विशुद्ध विपुल सारस्वत ज्ञान धन की ख्याति को सर्वत्र प्रसारित कर रहे हैं।

अध्यात्मविज्ञानयश पवित्रम्
वैराग्यपुष्ट भवमुक्तिहेतु।
नैराश्यपाथोधिनिमग्नजीवा
नद्यापितत्तारयतीह तस्य।।५।।

वैराग्य से परिपुष्ट और ससार से मुक्ति पाने की भावना से मण्डित अध्यात्म विज्ञान, यश से पवित्र बने उन महामानव के वे ग्रन्थ आज भी निराशा के महासागर मे निमग्न हुए जीवो को पार कर रहे हैं, कल्याण मार्ग पर ले जाते हैं

अज्ञातवृत्ते परिचायकन्तु,
ह्यभीतिदान निजघातिनञ्च।
कारुण्य भाव· करुणाकरस्य,
ह्यासीत्सदा क्षुद्रतमेऽपिजीवे।।६।।

जो अपरिचित थे और उन्हे मारना चाहते थे उन्हे भी पूज्य प्रवर आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज ने अभयदान दिया था। उस करुणा सागर महामुनि का छोटे से छोटे प्राणी पर भी करुणाभाव रहता था।

तत्सत्यनिष्ठा न हि शकनीया,
नालीकवाक्य स कदाप्यवोचत्।
विद्वत्सभाया विदुषा समक्षे
नोवाच तद्यन्न हि सत्यमासीत्।।७।।

उनकी सत्यनिष्ठा मे शका का कोई स्थान नहीं था। उन्होने कभी भी असत्य वाक्य का उच्चारण नहीं किया। उन्होने विद्वानो की सभा मे वह वाक्य नहीं बोला जो सत्य न हो।

मैत्री-क्षमा-दान-विराग-धैर्य,
दया-दम-त्याग-कृपा-शमैश्च।
गुणैर्विशिष्टै स मुनि र्वशिष्ठो,
लप्सीष्ट लोके महतीं प्रतिष्ठाम्।।८।।

मैत्री, क्षमा, दान, वैराग्य, धैर्य, दया, त्याग, कृपा और त्यागभाग आदि विशिष्ट गुणो के द्वारा उस महा मुनिवर ने ससार मे महान प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

केचिज्जना बाह्यगुणै सुरम्या,
भवन्ति केचित्तु निजान्तरगै।
परञ्च सच्छीलधना जना ये,
ते सर्वथा सर्वगुणैर्लसन्ते।।९।।

कुछ मानव बाह्य गुणो से सुरम्य होते हैं और कुछ अपने अन्तरग गुणो से रमणीय होते हैं। परन्तु जो महापुरुष सत्यशील के धनी होते है वे अपने सर्व गुणो से सदा सुशोभित होते हैं और लोगो के आकर्षण का केन्द्र होते हैं।

मनोहरा ये बहिरेव रम्या
अन्त सदा ते बदरीफलवत्।
अन्तर्मृदुर्यो जटिल स्वरूप,
सोऽ अप्फल वत् सरसो दयालु।।१०।।

जो बाहर से तो बेर के समान मनोहर और रमणीय लगते है परन्तु वे अन्दर से कठोर होते हैं। जो बाहर से जटिल स्वभाव वाले दिखते हैं वे अन्दर से नारियल फल के समान सरस, मृदु और दयालु होते हैं।

उच्चाशयो लोकहितोपकारी,
अन्तर्बहिस्तिष्ठति तुल्यरूप ।
द्राक्षाफलवत् रसता दधानो,
विराजते कोऽपि महामनुष्य ।।११।।

उच्च आदर्शों से सम्पन्न, लोक हितैषी और परोपकार परायण महापुरुष अन्दर और बाहर से एक रूप होते हैं। द्राक्षा फल अगूर के समान सरसता से परिपूर्ण कुछ ही महापुरुष यहाँ प्राप्त होते हैं।

पीत्वाविष प्राणहर स्वय य.,
प्राणप्रद यच्छति चामृत वै।
महाप्रतापी च महातपस्वी,
प्रजायते कोऽपि स दैवयोगात्।।१२।।

जो लोक के दुर्व्यवहार रूपी विष को पीकर भी दूसरो को प्राणदाई अमृत प्रदान करता है ऐसा महाप्रतापी और महान तपस्वी महापुरुष देव योग से ही जन्म धारण करता है।

१५
समयोबलीयान्

महाबली वाऽपि बलैर्विहीनो,
भूपोभवेद्‌वा भवभूतिहीन ।
नास्तीह लोके पुरुषस्तु कोऽपि,
यो दण्डपाणे न करै गृहीत ।।१।।

चाहे कोई बलवान हो, चाहे बलहीन हो, राजा हो या रंक, कोई भी ऐसा पुरुष नहीं है जिसे मौत ने न घेरा हो।

ज्ञानी सदाध्यानरतस्तपस्वी,
वेदान्तविद्यानिपुणो मनस्वी।
प्रख्यातविद्योऽपि गुहागतोऽपि,
कृतान्तहस्तान्न सुदूरमास्ते।।२।।

ज्ञानी और सदा ध्यान मे तल्लीन रहने वाला तपस्वी अथवा वेदान्त विद्या निष्णात, मनस्वी अनेक विद्याओ का प्रख्यात विद्वान हो, चाहे कोई गुफा मे भी क्यों न छुपा हो, वह भी काल के हाथ से दूर नहीं है।

समागतड् कालकरालदूतम्,
भयावह दण्डधर कठोरम्।
विलोक्य ससारसुखेषु सक्तो
जीव प्रकाम रुदति त्वजस्रम्।।३।।

भयावह कठोर दण्ड को धारण करने वाले काल के कराल दूत के आने पर संसार सुखो में आसक्त जीव अत्यन्त रुदन करता है।

जानाति विज्ञो मरण ध्रुवन्तु,
नास्त्यत्र कश्चिद् ह्यमर पदार्थ
यो जायते स म्रियते त्ववश्यम्।
मृत्यु र्नराणा नियति र्न शका।।४।।

विद्वान पुरुष जानता है कि मरण निश्चित है। यहाँ कोई भी पदार्थ अमर नहीं हैं। जो जन्मता है वह अवश्य मरता है। मानवो की मृत्यु निश्चित है, इसमे कोई शका का स्थान नहीं है।

आत्मा कदाप्यत्र न नाशमेति,
नाश वपूषि ह्युपयान्ति पुसाम्।
आत्मा न नश्यो न जरामुपैति,
सदाऽक्षरोऽय प्रलयेऽपि जाते।।५।।

आत्मा कभी भी नष्ट नहीं होती है। मनुष्यो का शरीर ही नष्ट होता है। आत्मा न नष्ट होती है न जराग्रस्त होती है। प्रलय होने पर भी आत्मा सदा अक्षर रहती है।

कर्माणि जीवेन पुराकृतानि,
सर्वाणि कर्माणि फलन्ति तानि।
चेत्तानि कर्माणि सुदुष्कृतानि,
शुभानि वा पुण्यमयानि यानि।।६।।

जीव ने पूर्व जन्म मे जो कर्म किए हैं चाहे वे अशुभ हैं अथवा शुभ है सभी अपना फल प्रदान करते है।

पूर्वङ् कृत यन्मनुजेन कर्म,
तत्कर्मपाको ननु भुज्यतेऽत्र।
इत्थ विजानाति सुधी र्महात्मा,
मूढस्तु दैव ननु निन्दतीह।।७।।

मनुष्य ने पहले जो कर्म किए है। उन कर्मों का फल उसे अवश्य यहॉ भोगना होता है। इस तथ्य को ज्ञानी महापुरुष महात्मा लोग जानते हैं। मूर्ख लोग तो केवल भाग्य की ही निन्दा करते हैं।

पुराकृतङ् कर्मफलम्मनुष्यो,
भुकत्वा समाप्येह भवेद् विशुद्ध ।
यो नेह भुङ् क्ते कृतकर्मपाक
जन्मान्तरेऽसौ खलु भोक्ष्यतेऽत्र।।८।।

जो मनुष्य पूर्व कृत कर्मों को यहाँ भोग कर समाप्त कर देता है और आगे के लिए कर्म बन्धन नहीं करता, वह विशुद्ध स्वरूप वाला हो जाता है। और जो पूर्व कृत कर्मों के फल को यहॉ नहीं भोगते है उन्हे जन्मातर मे अवश्य भोगना पडता है।

श्रेयस्करङ् कर्मफलानुभागम्,
मत्वा मनस्वी तु सुखेन भुङ्कते।
दैवेनदत्त सुख-दु ख-जातम्,
सँल्लभ्य मूढो विजहाति मोदम्।।९।।

जो ज्ञानी महापुरुष है वे जीवन मे आने वाले सुख दु ख को कर्मों का फल समझ कर प्रसन्नता से भोगते है। मूर्ख लोग भगवान की देन समझ कर सुख-दु ख को प्राप्त करके दु खी होते हैं। उनके जीवन की प्रसन्नता (आनन्द) नष्ट हो जाती है।

विमुक्तचिन्तो गतसर्वसगो,
धीरो मनुष्यो जितरागमोह ।
अध्यात्मनिष्ठो नरपुगवस्तु,
विलोक्य काल न विभेति तस्मात्।।१०।।

सर्व चिन्ताओ से मुक्त और सर्व सगों से रहित, जिन्होने राग द्वेष को जीत लिया है, ऐसे धीर पुरुष, जो अध्यात्म निष्ठ नर भूषण होते हैं, वे काल को देखकर भयभीत नहीं होते हैं।

नित्य न किञ्चिज्जगतीहवस्तु,
मिथ्यास्ति सर्वं नहि सत्यमेकम्।
सत्यञ्च नित्यम्मरण नराणाम्,
यश्चाद्य जातो खलु नक्ष्यति श्व ।।११।।

यहाँ ससार मे कोई भी वस्तु नित्य नहीं है। सभी कुछ नाशवान है। कुछ भी सत्य शाश्वत नहीं है। मनुष्यो का मरण नित्य और सत्य है। जो आज जन्म लेता है, उसकी कल अवश्य मृत्य होती है।

मृत्यो र्भयात्कम्पत एव भीरुर,
मृत्यु समाश्लिष्यति कर्मवीर।
धीरो विनाश नियत विभाव्य,
गृहागत सत्कुरुते महात्मा।।१२।।

मृत्यु के भय से कायर लोग काँपते हैं। परन्तु जो कर्म वीर होते हैं। वे तो मृत्यु का आलिगन करते हैं। धीर पुरुष विनाश को नियति मान कर, उसके प्राप्त होने पर उसका सत्कार करते हैं।

मृत्यो सदा मूढजनो बिभेति,
ज्ञानी महात्मा न कदापि तस्मात्।
जातस्य जीवस्य मृति र्ध्रुवास्ति,
मृतस्य जन्माऽपि महाध्रुवञ्च।।१३।।

मृत्यु से मूर्ख लोग सदा डरता है परन्तु ज्ञानी सन्त पुरुष उससे कभी नहीं डरता, क्योकि जो जन्मता है उसकी मृत्यु भी अवश्य होती है।

मृत्योर्बलिष्ठो न हि कोऽपि जीव,
जीवा सदा मृत्युमुखे वसन्ति।
यश्चेष्टते मृत्युमुख पिधातु,
स बालुकाभि सरित रुणद्धि।।१४।।

मृत्यु से बलवाल कोई भी जीव नहीं है। सभी जीव सदा मृत्यु के मुख मे वास करते हैं। जो मृत्यु के मुँह को बन्द करना चाहता है वह तो रेत से नदी को रोकना चाहता है।

१६

योग:

सयोगयोगो यदि वर्ततेऽत्र,
वियोगयोगोऽपितु वर्ततेऽत्र।
रागी जन प्राप्य वियोग योगइ
कष्टायते नैव कदाप्यरागी।।१।।

यदि यहाँ सयोग योग प्राप्त होता है तो वियोग योग भी यहीं मिलता है। सासारिक वैभव मे आसक्त मानव वियोग योग को प्राप्त करके दु खी होता है। विरागीजन नहीं।

स आत्मरामो महत्ताम्महीष्ठो,
जितेन्द्रियोऽध्यात्मगुणे गरिष्ठ।
त्यागी तपस्वी सदय सहिष्णु
कालेन सूरि र्जरसमनाप।।२।।

पूज्य आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज, अपने अध्यात्म गुणो से सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित थे, उनकी उज्ज्वल सयम साधना ने उन्हे महिमा मण्डित बना दिया था। वे महान तपस्वी, उत्तम त्यागी, दया सिन्धु और सहिष्णुता के अद्वितीय आदर्श थे। समय के प्रभाव से वे वृद्धत्व को प्राप्त होने लगे।

जरामुपेत्याऽपि स आत्मनिष्ठ
क्षीण शरीराद् गुरुता दधान।
तेजस्तितिक्षा करुणा दया च,
जीर्णेऽपि देहे प्रबला बभूवु।।३।।

यद्यपि समय के प्रभाव से उनके शरीर पर बुढापा आ गया था, तथापि वे उच्च पदस्थ, आत्मनिष्ठ महापुरुष थे। उस शरीर की क्षीण अवस्था में श्री गुरुतर कार्यभर को सहर्ष और कुशलता से वहन कर रहे थे। उनके उस जीर्ण देह में भी तेजस्विता, तितिक्षा, करुणा और दया भावना प्रबल रूप में प्रतिष्ठित थी।

हिमालयात्तुङ् गतरश्चरित्रे
शीले गभीरो हि यथा समुद्र ।
सौम्य स्वभावो रजनीशतुल्य,
स्वतेजसाऽभासत भानुतुल्य ।।४।।

वे महामहिम आचार्य देव चरित्र मे हिमालय से भी उच्च थे। उनका शील स्वभाव समुद्र सम गभीर था। वे चन्द्रमा के समान सौम्य प्रकृति और अपनी तेजस्विता से सूर्य के तुल्य प्रकाशमान थे।

मुनिर्महात्मा जरयाभिभूतो,
निजेन्द्रियाणा विषयैर्विहीन ।
रोगारिधौत शिथिलानताङ् ग,
शय्याधिरूढो न जहौ स्वधैर्यम् ।।५।।

उन महामुनीश्वर को यद्यपि वृद्धावस्था ने घेर हुआ था, उनकी इन्द्रियॉ विषयो से उपरत थी। रोगो के आक्रमणो से उनके अगोपाग शिथिल हो गए थे। वे शय्याधिरूढ थे तथापि उन्होने धैर्य को नही छोड़ा था।

वृद्धस्तथा व्याधिपरीतदेह
सुस्तासबाहु कृशदेहबन्ध ।
रोगाभिधानेन महारिणाऽसौ,
कार्येषु सर्वेषु कृतोऽस्वतत्र ।।६।।

वे वयोवृद्ध महापुरुष व्याधि से ग्रस्त देह वाले थे, उससे उनके शरीर के अस्थि बधन कृश हो गए थे। अनेक रोग रूपी शत्रुओ ने उन पर प्रहार किए हुए थे परन्तु वे फिर भी अपने स्वकृत कार्यों को स्वतत्रता से करते थे।

कर्कसफोटरुजा धृष्ट, सर्वथा कलेशपीडित ।
पीड्यमानोऽपि दु खौघै, धैर्य धीर स नात्यजत् ।।७।।

कर्क स्फोट (कैंसर) जैसे भयकर रोग से पीडित, अनेक अन्य कष्टों से सताए जाते हुए भी दु खो से घिरे हुए उस महान साधक ने धैर्य नहीं छोड़ा ।

वैद्यै र्भक्तै सुशिष्यैश्च सेव्यमानोऽप्यहर्निशम् ।
अन्त पीडामसह्यान्ता सोढ्वाऽप्यासीत्प्रसन्नधी ।।८।।

अपने भक्त वैद्यो और अपने शिष्यो के द्वारा रात दिन सेवा किये जाते हुए भी और आन्तरिक असह्य पीडा को सहन करके भी वे प्रसन्न चित्त थे।

१७
उपदेष्टा

रोगशय्याशयानोऽपि, सत्याऽहिंसा परायण ।
श्रावकॉंश्छ्राविकाश्ँचैव, धर्ममार्गमुपादिशत् । ।१ । ।

सत्य अहिसा परायण उस महामानव ने रोग शय्या पर विराजमान होते हुए भी श्रावक और श्राविकाओ को धर्म-मार्ग का उपदेश दिया।

सर्वथा गुरव स्तुत्या नि सत्वा अपि बान्धवा ।
दुराचारा धनाढ्याश्च, गर्हणीया सदा बुधै । ।२ । ।

निसत्व बन्धुओ को भी गुरु जनो की सदा स्तुति करनी चाहिए। और दुराचार मे प्रवत्त लोगो की, ज्ञानी पुरुषो को गर्हा करनी चाहिए।

धर्म रक्षति यो जीवो, धर्मो रक्षति तज्जनम् ।
यो न रक्षति धर्म स्व, धर्मस्त नैव रक्षति । ।३ । ।

जो मनुष्य धर्म कर्त्तव्य का पालन करते है, धर्म भी उस प्राणी की रक्षा करता है, जो धर्म की रक्षा नहीं करता, धर्म भी उसकी रक्षा नहीं करता।

शौच सत्यमहिसाञ्च, मैत्रीञ्च मुदिता दयाम् ।
कारुण्यमार्जव धैर्य, न त्यजेद् बुद्धिमान्नर । ।४ । ।

बुद्धिमान पुरुष को शौच, सत्य अहिंसा और मैत्री, प्रसन्नता, दया, कारुण्य, आर्जव और धैर्य इन उत्तम गुणों को नहीं छोडना चाहिए।

पैशुन्यञ्चैव विद्वेषमहकार तथा भयम् ।
आलस्यञ्च प्रमादञ्च, हिसनम्मतिमाँस्त्यजेत् । ।५ । ।

पैशुन्य, द्वेष, अहकार तथा भय, आलस्य, प्रमाद और हिंसा इन सबका बुद्धिमान को त्याग करना चाहिए।

सत्य नैव परित्याज्य सत्य तारयति पजाम् ।
सत्येन ध्रियते लोक, सत्यमस्ति गतिर्नृणाम् । ।६ । ।

सत्य का त्याग नहीं करना चाहिए, सत्य प्रजा को तारने वाला है। सत्य द्वारा ही लोक धारण किया जाता है। सत्य से ही लोगो को सद्गति प्राप्त होती है।

नैव सत्यवताकिचदशुम विद्यते कवचित् ।
तस्मात्तदेव वक्तव्य, सत्यमस्ति निरापदम् । ।७ । ।

सत्यवादी का कही भी, कोई भी अशुभ नहीं होता । इसलिए सत्य ही बोलना चाहिए। सत्य निरापद होता है।

'अहिसा परमोधर्म' गीयते शास्त्रविज्जनै ।
मनसा कर्मणा वाचा, जीव नैव प्रपीडयेत् । ।८ । ।

शास्त्रज्ञ महापुरुष कहते है कि अहिंसा परम धर्म है। अत मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को पीडित नहीं करना चाहिए।

अहिसकस्तु सर्वेषा जीवानाम्परम सुहृत् ।
अत कश्चिन्न तस्यारि र्नचासौ कस्यचिद्रिपु । ।९ । ।

अहिसक तो सभी प्राण्यिो का परम सुहृद् होता है। अत उसका कोई भी शत्रु नहीं होता और वह भी किसी का शत्रु नहीं होता।

अक्रोष्टा न भवेत्कश्चिन्न भवेत्पर निन्दक ।
नहि परावमन्ता च, न चैव परवञ्चक ।।१०।।

कोई भी क्रोधी न हो, न ही कोई दूसरे की निन्दा करने वाला हो, और नही कोई दूसरे का अपमान करने वाला हो और न ही कोई किसी को ठगने वाला हो।

यदीत्थमाचरञ्जीवो जीवेद्भूतहितेरत ।
स तु स्वप्नेऽपि दु खाग्नेस्ताप नैव सहिष्यते।।११।।

जो प्राणी इस प्रकार प्राणी मात्र के हित मे अपने को लगा कर जीता है वह तो स्वप्न मे भी दुखाग्नि और ताप नहीं सहेगा अर्थात् वह सदा सुखी रहेगा।

उग्रादुग्रतरोभूत्वा रोग सूरिमपीडयत् ।
रोगशय्याशयानोऽसौ, सस्मार जन्मदाम्महीम्।।१२।।

उग्र से भी उग्र रूप धारण करके रोग ने आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मा राम जी म० को पीडित किया। रोग शैय्या पर आसीन होते हुए भी उन आचार्य देव ने जन्मदात्री भूमि को स्मरण किया।

१८
मातृ-मही

या कर्मभूमिर्खलु पुण्यभूमिर्,
याध्यात्मभूमि र्नितराङ् गरिष्ठा।
या देवभूमि प्रथिता कवीन्द्रै,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।१।।

जो कर्म भूमि है वह निश्चय ही पूण्य भूमि है। जो अध्यात्म भूमि है वह नितान्त गौरवान्वित बनाने वाली है जिसे देव भूमि कह कर कवियो ने स्तुति गान किया है। वह मेरी जन्मभूमि महिमा शाली है।

या वीर वाणी परमा पवित्रा,
कल्याणकर्त्री जगतो जनानाम्।
यत्र प्रसूता तिमिरापहर्त्री,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।२।।

जो वीर वाणी परम पवित्र है और जगत के मानवो का कल्याण करने वाली है। जहा अन्धकार को दूर करने वाली उस वाणी का प्रादुर्भाव हुआ अर्थात् जहॉ भगवान महावीर स्वामी ने अपनी वीतराग वाणी का दान दिया, प्रकाश किया, ऐसी महान् वह मेरी मातृभूमि है।

आद्य प्रकाशो ननु सभ्यताया,
यस्या धरातो गतवान् सुदूरम्
या सेविता वेद विदा वरेण्यैर्,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।३।।

जहॉ सर्व प्रथम सभ्यता का प्रकाश हुआ और सुदूर देशो मे प्रसारित हुआ, जो

वेद विद्या के विद्वानो द्वारा पूज्य रही है, वही महिमा वाली मेरी जन्मभूमि है।

या रामकृष्णादिमहामनुष्यै,
शिवप्रतापादिसमै प्रवीरै।
या वन्दिता प्राणपणेन भक्तैर्,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।४।।

जो राम कृष्ण आदि महापुरुषो, शिवाजी महाराज और महाराणा प्रताप जैसे शूरवीरो द्वारा प्राणपण से वन्दित रही है। ऐसी महायशस्वी मेरी जन्म भूमि है।

विद्वद्वरेण्यै र्बहुशास्त्रविज्ञैर्,
वैज्ञानिकै काव्यकलाविधिज्ञै।
याद्यापि लोके स्वयशो विधत्ते,
महीयसी सा ममजन्मभूमि ।।५।।

विद्वानो द्वारा जो पूजित रही और जो आज भी विविध शास्त्र-विज्ञो, वैज्ञानिको, काव्यकला मे निपुण कवियो द्वारा अपने उत्तम यश से लोक मे सुशोभित है। वही महान मेरी जन्मभूमि है।

तीर्थोदकै पुण्यतमै पवित्रैर्,
या सिञ्च्यते रात्रिदिव प्रकामम्।
मुक्तिप्रदा स्नेहमयी सुपुत्रा,
महीयसी सा मम जन्मभूमि ।।६।।

तीर्थों के उद्भव से उत्तम पुण्यो वाली तथा पवित्र है, जो स्नेहमयी और मोक्ष प्रदान करने वाली है और अपने पुत्रो द्वारा जो रात दिन अत्यन्त अभिषिचित है। वही महिमावान मेरी जन्मभूमि है।

भागीरथी पुण्यजला पावित्रा,
गोदावरी भानुसता च कृष्णा।

अद्भि पवित्रै र्ननु पावयन्ति,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।७।।

जिसे भागीरथी, यमुना महानदी अपने पवित्र जल से पवित्र कर रही है, वही-महान् गुणो वाली मेरी जन्म भूमि है।

हिमालयो नीलगिरिश्च सह्यो
विन्ध्याचलो देवगिरि सुमेरु ।
श्रेयस्करीं या ननु मण्डयन्ति,
महीयसी सा मम जन्मभूमि ।।८।

जिस कल्याण कारिणी भूमि को हिमालय और नीलगिरि, विन्ध्याचल, देव गिरि, सुमेरु के साथ सुशोभित करते हैं, वही महिमा मण्डित मेरी जन्म भूमि है।

रत्नाकरो यच्चरणारविन्दम्,
दिवानिश वारितड्ग हस्तै ।
प्रक्षाल्य धन्या कुरुते निजाऽप,
महीयसी सा मम जन्म भूमि ।।९।।

रत्नाकर-समुद्र जिसके चरण कमलो को दिन रात अपने लहरो रूपी हाथो से धोकर के अपने आपको और अपने पानी को धन्य करता है। ऐसी महिमामयी मेरी जन्मभूमि है।

शार्दूल भल्लूक गजादि पूर्णैर्,
महाविशालै सघनैर्वनौघै ।
सुशोभमानात्र विराजते या,
महीयसी सा मम जन्मभूमि ।।१०।।

जो सिह, भालू और हाथियो से परिपूर्ण और महाविशाल वनो के समूहो से जो सुशोभित है वही महिमाशाली मेरी जन्मभूमि है।

१९

प्रस्थानम्

मासत्रयान्तक दु ख, घोरङ् कष्टतरम्महत् ।
सूरीश्वर स पुण्यात्मा, सेहे मत्वा सुखव्रजम् । ।१ । ।

महाघोर कष्टो को भी सुख समूह समझकर सूरीश्वर पुण्यात्मा पूज्य श्री आत्मा राम जी महाराज ने तीन मास तक सहन किया ।

अभ्युपेत, तथा कालो, दष्ट्रोत्कटमुखावह ।
प्राणमच्छिरसा पूर्वम्मुनि धर्मदिवाकरम् । ।२ । ।

भयावह दान्तो के कारण विकराल मुख वाले काल ने आचार्य श्री के पास पहुँच कर उस धर्म दिवाकर मुनि पुगव को प्रणाम किया ।

नताननस्तत काल , सस्पृश्य चरणाम्बुजम् ।
शुभङ्करस्य कर्णेऽसौ, जजाप मधुर वच । ।३ । ।

शुभकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के पावन चरणारविदो को स्पर्श करके विनम्र मुख से काल ने आचार्य श्री के कानो मे मधुर वाणी का उच्चारण किया ।

भवता स्वागतार्थाय, दिवि तिष्ठन्ति देवता ।
भवद्भिस्तत्र गन्तव्य, तैरादिष्ट समागत । ।४ । ।

आपके स्वागत के लिए देवलोक के देवता आपकी प्रतीक्षा मे बैठे है । उन्होने मुझे आदेश देकर भेजा है । अत अब आपको वहाँ चलना चाहिए ।

निक्षिप्य दृष्टि समुपस्थितेषु
शिष्येषु भक्तेषु च सेवकेषु । ।

प्रशान्तमूर्ति करुणार्द्रचित्तो,
लोक विहातु स्व मतिञ्चकार।।५।।

काल को आया हुआ देखकर प्रशान्तमूर्ति करूणा से द्रवित चित वाले आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने वहाँ उपास्थित अपने शिष्यो, भक्तो और सेवको पर दृष्टिपात करते हुए इस लोक को छोडकर जाने का मन बनाया।

नेत्र-रस-निधि ब्रह्म सयुते खीष्ट वत्सरे।
'जनवरी' तिमासस्य तिथिस्त्रिशस्तदाऽशुभा।।६।।

उस समय सन् १९६२ के जनवरी मास की अशुभ तीस तारीख थी, जब आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामम जी महाराज ने महाप्रयाण किया।

निशीथ काले करुणावतारो,
धर्मध्वजो धर्मदिवाकरोऽसौ।
तत्याज देह तु तथा मुनीन्द्रो,
निर्मोकवस्त्रहि यथा फणीन्द्र।।७।।

करुणा के अवतार, धर्माचार्यों मे ध्वजा के समान उस महामुनि धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने अपने शरीर को अर्ध रात्री के समय उसी प्रकार त्याग दिया जैसे सर्प केचुली को त्याग देता है।

आत्माराम सरलहृदयो दीनबन्धुर्दयालु,
मायातीतो मृदुगुणधरो द्वेष मात्सर्यहीन।
विद्याविद्य मकलसुखधिस्त्यागवैराग्यशील,
शान्ताकारो जयतु सतत शान्तिद शान्तमूर्ति।।८।।

शान्त मूर्ति, भक्तो को शन्ति प्रदाता, सरल हृदय, दीनजनो के बन्धु दया परायण, माया मोह से दूर, शुभ गुणो से अलकृत, द्वेष और मात्सर्य आदि दुर्गुणो से दूर सभी प्रकार की विद्याओ के ज्ञाता, सभी सुख के सागर त्याग और वैराग्य शील, शान्त स्वभाव और शान्त आकृति वाले आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज की सदा जय हो।

२०
गुरु-महिमा

जलदपटलगूढ कान्तिहीनोऽपिभानु,
रवनितल सुसस्थ ह्यन्धकार हिनस्ति।
गुरुरपिजनपूज्योऽज्ञानहर्ताऽऽित्मरामो
वितरतुजन मध्ये ज्ञान-विज्ञान-कोषम्।।१।।

जिस प्रकार बादलो के समूह मे छिपा हुआ कान्तिहीन सा प्रतीत हाने वाला सूर्य पृथ्वी तल पर फैले हुए सम्पूर्ण अन्धकार को नष्ट करता ही है। उसी प्रकार अपने शिष्यो के अज्ञान को दूर करने वाले परम पूज्य गुरुवर श्री आत्माराम जी महाराज भक्त जनो के मध्य ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश रुपी खजाने को सदा वितरित करते रहे।

गुरोरात्मरामस्य चरणारविन्दम्,
महामोहमायापतितपावन यत्।
स्वशिष्यालिपुञ्जै सततसेव्यमानम्,
भजाम स्व चित्तेषु ननु धारयाम।।२।।

हम गुरुवर श्री आत्माराम जी महाराज के उन कमल रुपी चरणो को, जो महामोह मे पडे हुए जीवो को सदा पवित्र करने वाले हैं और अपने शिष्य रुपी भ्रमरो से सदा सेवा किए जाते हुए हैं, उनको हम अपने हृदयो मे धारण करते हैं और उनका स्मरण करते हैं।

कारुण्यामृत्त सागरो मुनिवरो यो धौतवस्त्रावृत,
विद्याशास्त्रसुधाकरो गुरुवर: शिष्यै सदा सेवित।
सत्याचार परायण सुपथिक प्राचार्य पीठस्थित,
मायामोहतमोहर स्त्ववतु मा ज्योति प्रदाता गुरु।।३।।

करुणा रुपी अमृत के सागर मुनिवर पूज्य आचार्य श्री धोत (श्वेत) वस्त्रो को धारण करने वाले विद्या और शास्त्रो के ज्ञान से चन्द्रमा के समान शान्ति देने वाले अपने शिष्यो से सदा सेवा किये जाते हुए, सत्य के आचरण मे लगे हुए सन्मार्ग पर चलने वाले, प्राचार्य की पीठ को सुशोभित करने वाले मोहमाया जन्य अन्धकार के नाशक श्री गूरु आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज मेरी रक्षा करे।

शिष्यवृन्दै सदा पूजितश्चार्चितो,
वेद-वेदाग-साहित्य-वेदान्तवित् ।
मोहमायान्धकाराद्विमुक्त सुधी,
वीतराग गुरुर्मा सदा रक्षतु ।।४।।

अपने शिष्य समूह से सदा पूतिज और अर्चित, वेद और वेदाग आदि नाना साहित्य के ज्ञाता, माया मोह के अन्धकार से मुक्त, ज्ञानी, वीतरागी गुरु आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी म० मेरी रक्षा करे।

सुविद्या पयोधिम्मुनीनामधीशम्,
दयालु कृपालु वितृष्ण सहिष्णुम् ।
स्वभक्तै सदा सेव्यमानतितिक्षुम्,
वय त्वा नमामो नमामो गुरो! त्वाम् ।।५।।

सद्विद्याओ के सागर मुनियो के अधीश्वर, दयालु कृपालु निर्लोभी, सभी प्रकार के कष्टो को सहन करने वाले, अपने भक्तो से सेवित, तितिक्षा युक्त हे गुरुवर हम तुम्हे प्रणाम करते हैं।

मुनिराजवरो मुनिराजसमो
मुनिवेशधरो मतिमानमर ।
मुनिवृन्दमनोगत मोहहर,
भवताद् स गुरु र्मम मोदकर ।।६।।

मुनिवृन्दों में अग्रणी, मुनिवेश मण्डित बुद्धिमान, सदा अमर, मुनियो के समूहो के मनों मे उत्पन्न होने वाले मोह का विनाश करने वाले गुरु मुझे प्रसन्नता प्रदान करे।

कलिकरालकरैर्नहि कम्पित,
कपिकुलाकुलकोमलकानन ।
कमलकोरककान्तकलेवर,
भवतु न सुख वैभवदायक ।।७।।

बन्दरो के समूह से आकुल मनोहर उपवन के समान जो गुरुवर कठोर कलियुग के हाथो से (प्रहारो से) भी विचलित नहीं हुए, जिनका शरीर कमल पत्र के समान सुन्दर हैं वे गुरुवर हमे सुख वैभव प्रदान करे।

विमलशान्तिकर करुणालय,
गुणनिधि र्गुणदानपरायण ।
सकलशास्त्रसुधारसवर्षको,
भवतु न सुख वैभव दायक ।।८।।

सुख शान्ति प्रदान करने वाले, करुणा के सागर, सभी प्रकार के सद्गुणो के खजाने, दूसरो को भी सद्गुण देने मे लगे हुए, सभी शास्त्रो के अमृत रस की वर्षा करने वाले, वे गुरु हमें सुख वैभव प्रदान करने वाले हो।

अखिलदोषनिशाचरभस्मक,
कमल-कोमल-कान्ति-समप्रभ ।
दुरित-सैन्य-विदारकशम्भुजो,
भवतु न सुख-वैभव दायक ।।९।।

सम्पूर्ण दोष रुपी निशाचरो को नष्ट करने वाले कमल के समान कोमल कान्ति से युक्त, पापो के समूह को समाप्त करने वाले, कार्तिकेय के समान वे गुरुवर हमे सुख और वैभव प्रदान करने वाले हों।

दुरित-दैन्य-विनाशक हे प्रभो!
सुखद-शान्ति-विधायक हे विभो!
श्रमणसघ-सुधारक हे गुरो!
भवतु न सुख-वैभव दायक ।।१०।।

सभी पाप और दीनता के विनाशक हे प्रभो! सुख शन्ति प्रदान करने वाले हे विभो!, श्रमण सघो के सुधारक हे गुरो!, आप हमारे सुख और वैभव के देने वाले हो।

स्व यशसाऽखिललोकतमोहरो,
जलजकोरककान्तकलेवर ।
सकलजीवदयाकरुणालय,
भवतु न सुख वैभव दायक ।।११।।

अपने यश से सम्पूर्ण विश्व के अन्धकार को दूर करने वाले, कमल की कलि के समान कोमल सुन्दर शरीर वाले, समस्त जीवो पर दया और करुणा करने वाले हे गुरु! आप हमारे सुख और वैभव को देने वाले हो।

चिरञ्जीलालपुत्रेण कृष्णदत्तेन शर्मणा।
रचितमात्मरामीय, काव्यरत्नमिद शुभम्।।१२।।

मुनिना सुव्रतेनद द्राक्तरोपाधिधारिणा।
हिन्द्यामनूदित तत्तु गुरु गौरव मण्डितम्।।१३।।

काव्येऽत्र चेत्कस्तु विशिष्टो,
गुरो कृपालो करुणाप्रसाद ।
स्वल्पोऽपि दोषो यदि दृश्यते तु,
मन्ये मदीयो खलु स प्रमाद ।।१४।।

यश शरीरेण विराजमानो,
धर्मध्वजोधर्म दिवाकरो य ।
स आत्मरामो मुनिराजराज,
काव्याञ्जलि स्वीकुरुतामिमा नौ।।१५।।

शिष्य-सन्तति-तति.

येषाम्मुनीनाङ् गतकाल्मषाणाम्
शिष्या प्रशिष्या वहवोऽत्र लोके।
विशुद्धशीला करुणार्द्र चित्ता,
अद्यापि सन्तीह विराजमाना ।।१।।

जिन पवित्र अन्त करण वाले महामुनियो के विशुद्ध शील से युक्त और करुणाा से परिपूर्ण हृदयो वाले बहुत से शिष्य-प्रशिष्य लोक मे विचरण करते हैं, वे महामुनि तो आज भी यहाँ विराजमान हैं

मान्यो माहपूज्यतमो लवश्री,
तेषा सुशिष्योनिजनामधन्य ।
श्री सोमराजो यतिना वरिष्ठ
आसीद गुरु श्री हरिदासकस्य।।२।।

महामान्य पूज्यवर श्री लव जी ऋषि के सुशिष्य, स्वनाम धन्य, यतियो मे वरिष्ट श्री सोमराज जी महाराज थे। उनके सुशिष्य थे श्री हरिदास जी महाराज।

हरिदासस्य शिष्येषु बुद्धिमत्सु तपस्विषु।
एक आसीन्महाप्राज्ञ श्री मलूको महाव्रती।।३।।

श्री हरिदास जी महाराज के बुद्धिमान, तपस्वी शिष्यो मे एक महाप्राज्ञ सुशिष्य थे श्री मलूक ऋषि जी महाराज।

तस्य चासीन्महासिह स्तत्छिष्य कुशलोमुनि ।
छजमलो महाराजो, राम लाल स्तथा सुधी।।४।।

उनके सुशिष्य थे श्री महासिह जी महाराज, उनके सुशिष्य श्री कुशल मुनि जी

महाराज, श्री छजमल जी महाराज तथा महाबुद्धिमान श्री राम लाल जी महाराज।

रामलाले गते स्वर्गे तत्छिष्यो ह्यमरो मुनि
आचार्यस्य पद प्राप, प्रसिद्ध पावन शुभम्।।५।।

महासाधक, विद्वद्वरेण्य श्री राम लाल जी महाराज के सुशिष्य थे महाप्रतापी श्री अमरसिह जी महाराज जिन्होने प्रसिद्ध पवित्र आचार्य पद को प्राप्त किया था।

तस्य द्वादश शिष्येषु रामबख्शास्तपोधन ।
दिव गते गुरौतूर्णमाचार्यपदभागभूत्।।६।।

उनके बारह शिष्यो मे तपोधन शिष्य थे श्री रामबख्श जी महाराज, जिन्होने अपने गुरु के स्वर्ग गमन के बाद आचार्य पद को सुशोभित किया।

रामबख्शो महात्यागी, धर्माचार्यपद शुभम्।
मोतीरामाय शिष्याय दत्वा मुक्तिवाप्तवान्।।७।।

महात्यागी आचार्य श्री राम बख्श जी महाराज ने महाबुद्धिमान पूज्य श्री अमर मुनि जी महाराज को अपना शुभ धर्माचार्य का पद देकर स्वय देह त्याग कर मोक्ष को प्राप्त किया।

मोतीरामो महात्यागी, सर्व-भूत-हिते रत ।
यथेक्ष्छालाभसन्तुष्ट पूज्य आसीत् यथा मणि ।।८।।

प्राणी मात्र के हितसाधक, महान त्यागी, यथेच्छा लाभ मे सन्तुष्ट रहने वाले पूज्य आचार्य श्री मोती राम जी महाराज मणि के समान सर्व प्रिय और पूज्य थे।

यथा गुरुर्महाप्राज्ञो, धर्मतत्वविदा वर ।
गणपतितथावाऽसीच्छिष्यरत्नशिरोमणि।।९।।

जैसे गुरु महाप्राज्ञ और धर्म तत्त्व ज्ञाताओं मे श्रेष्ठ पूज्य श्री मोती राम जी महाराज थे, वैसे ही उनके शिष्य रत्न पूज्य शिरोमणि श्री गणपतराय जी महाराज थे।

शिष्यो गणपतेरासीद् बावेति नाम विश्रुत ।
जयराम इति प्रख्यस्तपोयोगी महामुनि ।।१०।।

बाबा नाम से विश्रुत, प्रसिद्ध तपोयोगी, महामुनि पूज्य श्री जयरामदास जी महाराज, पूज्य श्री गणपतराय जी म० के शिष्य थे।

श्री जयरामदासाद्धि शालिग्रामो महामुनि ।
दीक्षामवाप्य शिष्यत्व लब्ध्वाप्रमोदमावहत् ।।११।।

पूज्य श्री जयराम दास जी महाराज से महामुनि श्री शालिग्राम जी ने दीक्षा प्राप्त की, उनका शिष्यत्वपाकर श्री शालिग्राम जी महाराज बहुत प्रसन्न हुए।

आत्माराम कपटरहित सर्वभावैर्विशुद्धो
मायातीत सरलहृदयो रागविद्वेषशून्य ।
कौमार्ये या गुणगणधर ज्ञानविद्यानुरागी,
शालिग्रामादलभत गुरो जैन-धर्मे स दीक्षाम् ।।१२।।

कपट रहित, सर्वभावो से विशुद्ध मायातीत, सरल हृदय, राग द्वेष से शून्य, ज्ञानविद्यानुरागी, किशोर अवस्था मे ही गुण गण धारण करने वाले श्री आत्माराम वैरागी ने पूज्य प्रवर श्री शालिग्राम जी महाराज से जैन धर्म मे मुनि दीक्षा ग्रहण की।

आत्मारामस्य तस्यैव, वैश्यवशविभूषण ।
हेमचन्द्रो महाराज शिष्योऽभून्मतिमान्नर ।।१३।।

उन्हीं पूज्य श्री आत्मा राम जी महाराज के शिष्य, वैश्य वश विभूषण, प्रख्यात

विद्वान पूज्य श्री हेम चन्द्र जी महाराज थे।

पद्म यथा पुष्करिणी जलस्थम्,
पकाच्च नीरान्नितरा विशुद्धम्।
श्रीपद्मचन्द्रोऽपि तथा विशुद्ध,
दीक्षामवाप्नोन्ननु हेमचन्द्रात्।।१४।।

पुष्करणी के जल मे स्थित पद्म पुष्करणी के पक और जल से जैसे नितान्त अलिप्त रहता है वैसे ही विशुद्ध और सासारिक पक से अलिप्त पूज्य महामुनीश्वर श्री पद्मचन्द्र जी ने पूज्य गुरुदेव श्री हेमचन्द्र जी महाराज से दीक्षा प्राप्त की।

अमरो मुनिरित्याख्यो वाग्मी वक्ता विचक्षण।
सुगुरो पभेचन्द्राद्धि लेभे दीक्षा यशस्विनीम्।।१५।।

वाग्मी, विचक्षण वक्ता, अमर मुनि इस नाम से विख्यात महान साधक ने सुगुरु पूज्य श्री पद्म चन्द्र जी महाराज से यशस्विनी मुनि दीक्षा ग्रहण की।

सम्पादक कविर्वक्ता लेखको वाग्विभूषण।
सद्धर्मतत्त्वविज्ञाता सुवाग्चातुर्य धर्मवित्।।१६।।

श्री अमर मुनि जी महाराज सम्पादक, कवि वक्ता लेखक वाग्विभूषण सद्धर्म तत्त्व के विज्ञाता, सुवाकचातुर्य और धर्मविज्ञानवेता इन विविध गुणो से सम्पन्न हैं।

सदसि प्राप्तसम्मान, शान्तो दान्त सुधीवर।
व्याख्याता गूढतत्त्वाना गुरुभक्त गुरु-प्रिय।।१७।।

सभा मे लब्ध प्रतिष्ठित, शान्त दान्त सुधीवर, गुढतत्त्वो के व्याख्याता श्री अमर मुनि जी महाराज गुरु प्रिय और गुरु भक्त हैं।

कुशल्नो धर्म कर्मेषु ज्ञानी ज्ञानप्रदो गुरु।

अमरोहि मुनि र्मान्य राजते भुवि भानुवत।।१८।।

धर्म कार्य मे कुशल, ज्ञानी और ज्ञान प्रदान करने वाले गुरुवर श्री अमर मुनि जी महाराज इस पृथ्वी पर सूर्य के समान सुशोभित हैं।

श्री अमर मुने शिष्याश्चत्वारो लोक-विश्रुता।
धर्म-प्राणा महासिद्धा सर्वथा धर्म साधका।।१९।।

श्री अमर मुनि जी महाराज के लोक विश्रुत, धर्म परायण, सर्वथा धर्म साधना मे सलग्न रहने वाले चार शिष्य हैं।

सुव्रत सुयशश्चैव सुयोग्य पकजस्तथा।
धर्म ज्योति प्रदातारो ह्यटन्ति भुवि निर्भया।।२०।।

धर्म ज्योति प्रदान करने वाले उनके शिष्य सुव्रत मुनि, सुयश मुनि, सुयोग्य मुनि और पकज मुनि निर्भय होकर जगत मे विचरते है।

निजगुरुगुणपूर्ण सुव्रतो नाम शिष्य,
धृतमृदुमुनिवेश प्राणि-हिसा-विरक्त,
श्रमणजनवरिष्ठ, ज्ञानविद्यानदीष्णो,
निखिलगुणगारिष्ठो राजते शिष्य रत्न।।२१।।

अपने गुरु के गुणो से पूर्ण, मृदमुनि वेशधारी, प्राणी हिंसा से विरक्त, श्रमणो मे वरिष्ठ, ज्ञान विद्या रूप नदी को पीने के इच्छुक, निखिल गुणो से गरिष्ठ, श्री अमर मुनि जी महाराज के शिष्य रत्न श्री सुव्रत मुनि जी सुशोभित हैं।

सारस्वत ज्ञानधन प्रविद्यो,
वाग्मी च वक्ता ननु सत्यनिष्ठ।
सद्धर्म सद्भावचयैर्विनम्रो,
विद्यानुरागी मुनि राजतेऽत्र।।२२।।

सारस्वत ज्ञानधन, प्रविद्य, वाग्मी और वक्ता, सत्यनिष्ठ, सद्धर्म और सद्भावनाओ से विनम्रीभूत विद्यानुरागी मुनि सुव्रत गुरु चरणों मे विद्यमान है।

यो गर्वहीनोऽपि गुणैरहीनो,
दीनप्रियो नैव कदापि दीन ।
विरागलीनश्च न रागलीन,
स सुव्रतो नैकव्रतो वरेण्य ।।२३।।

जो गर्व से हीन होने पर भी गुणो से अहीन अर्थात् गुणसम्पन्न हैं, दीनप्रिय दीन दुखियो को प्यार करते हैं, परन्तु स्वयं कभी भी दीन नहीं होते । वैराग्य मे लीन और राग से रहित हैं। ऐसे उस वरेण्य सुव्रत मुनि के एक नहीं, अनेक व्रत है।

ससाररागेषु सदा वितृष्णो,
विद्याऽऽगमज्ञानधने सतृष्ण ।
सत्यस्य चार्थी ननु सत्य वक्ता,
सत्याऽध्वनीनो जयताद् जगत्याम् ।।२४।।

ससार के रागात्मक बन्धनो से सदा विरक्त, विविध विद्याओ और आगम ज्ञान धन के सदैव अभिलाषी हैं। सत्य के इच्छुक और सत्य वक्ता हैं। सत्य मार्ग पर चलने वाले है। उनकी इस जगत मे जय हो।

यथा गुरुर्यस्य तथैव शिष्य,
एम०ए० द्वय ज्ञानधन प्रविद्य ।
प्रख्यातवक्ता च सुलेखकश्च,
स सुव्रतोनाम विराजतेऽत्र ।।२५।।

जैसे गुरु वैसे ही शिष्य के अनुसार डा० श्री सुव्रत मुनि डबल एम० ए०, पी० एच० डी० हैं। ज्ञान धन सम्पन्न और प्रविद्य हैं। प्रख्यात वक्ता और सुलेखक हैं। वे गुरु चरणो मे विराजित हैं।

धवल विमलवस्त्रै राजमान सदैव।
विगतकलुषशील सर्वथा शुद्धचित्त ।
मृदुलगुणगणाढ्यो, दर्पहीनोविनम्रो,
जयतुचरतु धर्मं सुव्रतोनाम सूरि ।।२६।।

धवल विमल वस्त्रो मे सदा विराजमान हैं। विगत कलुष शील, सर्वथा शुद्ध चित्त, मृदुल गुण समूह से समृद्ध, दर्पहीन, विनम्र श्री सुव्रत मुनि जी महाराज सदा जयवन्त हों और धर्माचरण में सन्नद्ध रहे।

सुयशो मूनिरित्याख्यो वाग्घन सयतेन्द्रिय ।
सुवक्ता धर्मतत्त्वज्ञ सदसि शोभतेसताम्।।२७।।

श्री सुयश मुनि जी वाग्धन, सयतेन्द्रिय, सुवक्ता, धर्म तत्त्व ज्ञाता सन्तो की सभा मे शोभते हैं।

सुयोग्याख्यो मुनि र्मान्यस्तपस्वी वै तपोधन ।
धर्मवेत्ता सुधीस्त्यागी, सहिष्णु शोभते भुवि।।२८।।

तपोधन तपस्वी श्री सुयोग्य मुनि जी धर्म वेता, सुधी, त्यागी और सहिष्णु हैं,जो इस पृथ्वी पर शोभायमान हैं।

पकजस्तु दयाधीर सेवाभाव परायण ।
सर्वभूतहितार्थाय तत्परोदृश्यतेसदा।।२९।।

श्री पकज मुनि जी दयाधीर, सेवाभाव परायण, सर्व भूतो के हित साधन मे सदैव तत्पर दिखाई देते हैं।

ख

शिष्यास्तस्यात्मरामस्य, सत्याऽहिंसाव्रतेरता ।
राजन्ते भुवि सर्वत्र, सन्तुष्टा येनकेन चित् ।।१।।

उन आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज के शिष्य सत्य अहिंसा आदि महाव्रतो मे सलग्न, आध्यात्मिक साधना से सन्तुष्ट भारत भूमि पर सर्वत्र विचरण करते हैं।

सर्वे मुनिवरा सन्ति, ह्यात्मतत्वविशारदा ।
तेजाोभि स्वतपोभिश्च, राजन्ते रवि सन्निभा ।।२।।

सभी मुनिवर आत्म-तत्त्व विशारद हैं। अपने तप और तेज से सूर्य के समान सुशोभित है।

ज्ञानो ज्ञान-धन ज्ञानी ज्ञाताऽज्ञात गुणान्वित ।
ज्ञीप्सुर्हिज्ञानशास्त्राणा नून ज्ञानवता वर ।।३।।

पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के सुशिष्य श्री ज्ञान मुनि जी महाराज ज्ञानधन से पूर्ण ज्ञानी हैं। ज्ञात-अज्ञात तत्त्वो से युक्त हैं। शास्त्र ज्ञान के सदैव इच्छुक हैं, वे ज्ञानियो मे श्रेष्ठ और सुविज्ञ हैं।

रत्नुस्तु रत्नतुल्योऽत्र राजते निजतेजसा।
ससार दु ख तप्ताना भृणाति पापसचयम् ।।४।।

आचार्य श्री के सुशिष्य श्री रत्न मुनि जी महाराज, रत्न के समान अपने दिव्य तेज से सुशोभित हैं। ससार के दु खो से पीडित व्यक्तियों के दु खो को दूर करते हैं।

क्रान्ति मुनिवरो-लोके, श्रद्धा-ज्ञान-समन्वित ।
धार्मिकान् सुजनान् शास्ति विशुद्ध जैनशासनम् ।।५।।

पूज्य श्री के शिष्य श्री क्रान्ति मुनिवर जी महाराज लोक मे श्रद्धा और ज्ञान के समन्वित रूप मे प्रसिद्ध हैं। धार्मिक लोगो को विशुद्ध जैन शासन मे दीक्षित करते रहते हैं।

शान्तस्वभावसम्पन्नो दानी त्यागी शिवो मुनि ।
धर्ममार्गानुवर्ती च शोभते मुनिमध्यग ।।६।।

शान्त स्वभाव सम्पन्न, धर्म प्रदाता, माया मोह के त्यागी युवाचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज, धर्म मार्गानुवर्ती मुनि वृन्द के मध्य मे सुशोभित हैं।

उपाध्यायो मुनिराज शास्त्रवेत्ता मनोहर ।
अहिंसासत्यशीलश्च सर्वथा विगतसपृह ।।७।।

अहिंसा सत्य और शील धर्म से मण्डित, सर्वथा विगत स्पृह, शास्त्रवेत्ता उपाध्याय प्रवर श्री मनोहर मुनि जी महाराज हैं।

भगवत इति प्रख्यस्तपस्वीशुद्ध मानस ।
शास्त्रचिन्तारतो नित्य भ्राजते निजतेजसा।।८।।

शुद्ध मानस वाले तपस्वी श्री भगवत मुनि जी नित्य शास्त्र चिन्तन मे सलग्न होकर अपने तेज से विराजित हैं।

हितेष सौम्यरुपेण विभाति सौम्यदर्शन
मुनिराजो महाधीरो जैन शासन तत्ववित्।।९।।

सौम्य रुप और दर्शनवान, जिन शासन तत्वज्ञ, धैर्य निष्ठ श्री हितेष मुनि हैं।

जितेन्द्रियो जितेन्द्राख्य कामक्रोधविजित ।
वशी साधु सुधीधीरो भूतग्राम हिते रत.।।१०।।

इन्द्रियो को जीतने मे तत्पर श्री जितेन्द्र मुनि जी भी, काम क्रोध से दूर रहकर साधु जीवन के अनुरुप प्राणी मात्र के हित साधन मे लगे हैं।

परमेश सुधीर्वाग्मी ज्ञानतत्वविचारक ।
राजते शुभ्रवस्त्रेषु सर्वथा गतकल्मष ।।११।।

बुद्धिमान, ज्ञान तत्व विचारक, श्वेत वस्त्र धारी श्री परमेश मुनि जी कल्मष रहित प्रतीत होते हैं।

शैलेशो धर्मतत्वज्ञ सयमी शुद्धमानस ।
धौतचीरपरीवीत, शोभते मुनिवेशभृत्।।१२।।

धवल साधु वेश धारण किए हुए, धर्म तत्त्व ज्ञाता, सयम से शुद्ध हुए मानस वाले श्री शैलेश मुनि जी सुशोभित हैं।

शिरीष शोभते शुद्ध शान्तो दान्तो महामुनि ।
सर्वथा सत्वसम्पन्नो जैन शासन शिक्षित ।।१३।।

शुद्ध शान्त दानी, सत्त्व सम्पन्न, जैन शासन शिक्षा युत श्री शिरीष मुनि भी सुशोभित हैं।

पीयूषो नाम विख्यात साम्यो धर्म विदा वर ।
सुधावर्षी यथेन्दु स्यात् शोभतेऽय तथा मुनि ।।१४।।

धर्म वेता, सौम्य सुधा वर्षी चन्द्रवत विराजित है श्री पीयूष मुनि जी।

यथा रूपेण गन्धेन, पाटलो जनमानसम्।
हरति सौरभश्चापि मनासि विदुषा तथा।।१५।।

जैसे गन्ध से, रुप से गुलाब जन मानस को आकर्षित करता है वैसे ही सौरभ मुनि जी भी तत्त्व वेताओ के मन को हरते हैं।

यथा सुमेघा निज वारि,
दानैस्तृषाञ्जनानामपयन्ति नूनम् ।
तथाऽऽत्मरामस्य सु शिष्य बगा,
विद्यापि पासून नूनम् तर्पयन्ति । ।१६ । ।

जैसे श्रेष्ठ बादल अपने जल वर्षण से प्यासे लोगो की प्यास को शान्त करते हैं वैसे ही आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आतमाराम जी महाराज के सुशिष्य और प्रशिष्य धर्म विद्या के अभिलाषियो की अभिलाषाओ को पूर्ण करते हैं ।